हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 6, अंकः 298, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 17 अप्रैल, 2022 दिन रविवार गाजीपुर/वाराणसी

बिहार : जमीन विवाद को लेकर दरभंगा में दो पक्षों में हिंसक झड़प

तेजाब हमले से छह लोग झुलसे, अस्पताल में चल रहा इलाज

दरभंगा। बिहार के दरभंगा जिले में भूमि विवाद को लेकर दो गुट आपस में भिड़ गए। एपीएम थाने के शिवैसिंहपुर गांव में दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई। इस दौरान शरीर पर तेजाब गिरने से दोनों पक्षों के छह लोग घायल हो गए। घायलों में दो महिलाएं भी शामिल हैं। चार घायलों का इलाज डीएमसीएच व दो का इलाज निजी क्लिनिक में चल रहा है। डीएमसीएच में एक पक्ष के बजरंगी साह और दूसरे पक्ष के मोहन भगत के पुत्र विकास कुमार, अशोक भगत और विजय कुमार का इलाज चल रहा है।

एक पक्ष के बजरंगी साह की पत्नी उषा देवी ने कहा कि श्रीपुर बहादुरपुर निवासी मोहन भगत ने अपने परिजनों के साथ उनके पति की सोने-चांदी की दुकान में आकर मारपीट की। पति जान बचाने के लिए जेवर साफ करने वाला एसिड लेकर आए। एसिड की बोतल की छीनाझपटी में लोग घायल हो गए। उधर, मोहन के परिजनों ने बताया कि वे लोग विवादित जमीन पर फसल लगाने गए थे। बजरंगी वहां एसिड की बोतल लेकर पहुंचा और विकास के सिर पर दे मारा। एपीएम थानाध्यक्ष शैलेश कुमार ने बताया कि बेंता ओपी पुलिस बयान ले रही है।

एपीएम थाने के शिवैसिंहपुर गांव में भूमि विवाद को लेकर शुक्रवार की शाम करीब पांच बजे हुई मारपीट की घटना को लेकर आ रहे अलग-अलग बयान से मामला उलझ गया है। घटना के लिए कौन-कौन लोग दोषी हैं, इसका खुलासा पुलिस की जांच में होगा। घटना के बारे में बजरंगी साह की पत्नी उषा देवी का कहना है कि उनका श्रीपुर बहादुरपुर निवासी मोहन भगत के साथ वर्ष 2007 से ही भूमि विवाद चल रहा है। शुक्रवार की शाम बजरंगी साह अपनी दुकान में बैठे थे। तभी मोहन भगत के परिजन अपने समर्थकों के साथ दुकान पर आ धमके और कुदाल समेत लाठी-डंडे से हमला कर दिया। चारों तरफ से हमला होते देख बजरंगी जेवर साफ करने के काम आने वाला एसिड छिड़कने लगा। एसिड की बोतल की छीनाझपटी में दोनों पक्षों से चार लोग घायल हो गए। उसी वक्त दुकान में बैठी एक महिला ग्राहक बीच-बचाव करने लगी, लेकिन उसे भी हमलावरों ने पीट दिया। शोरगुल सुनकर दौड़ी आई बजरंगी की पत्नी उषा देवी की भी हमलावरों ने जमकर धुनाई कर दी। उधर, डीएमसीएच में इलाजरत मोहन भगत ने कहा कि मेरे परिवार के लोग खेत में पौधे लगा रहे थे। इसी दौरान बजरंगी साह वहां पहुंचा और पौधे लगाने से मना किया। मैंने जब कहा कि क्यों रोक रहे हो तो उसने मुझ पर एसिड से हमला कर दिया। वहीं, मोहन की पतोहू रूबी देवी ने कहा कि मेरा बेटा आयुष (10) खेत पर पौधे लगाने गया था। उसे नहीं पता था कि इस जमीन को लेकर विवाद चल रहा है।

बजरंगी के परिजनों ने उसे पौधे लगाने से मना किया। तब मेरे पति विकास कुमार वहां पहुंचे। इसी दौरान विवाद शुरू हो गया। रूबी ने कहा कि विवाद के दौरान बजरंगी साह और उनकी पत्नी उषा देवी ने मेरे पति और बेटे पर एसिड से हमला कर दिया। तब तक मेरे देवर भी वहां पहुंच गए। उन लोगों पर भी एसिड अटैक किया गया। रूबी ने कहा कि इस घटना में मेरे परिवार के चार लोग घायल हुए हैं। इनमें से एक की हालत गंभीर है। चारों का इलाज डीएमसीएच में चल रहा है। फिलहाल इस मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं हो पाई है।

दुनिया के कई देशों के मुकाबले में भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमत कम

नई दिल्ली। देश में हाल में ईंधन की कीमतों में भारी बढ़ोतरी हुई है। जहां पेट्रोल और डीजल की कीमत में हाल में 10 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी हुई है। वहीं एलपीजी, सीएनजी और पीएनजी की कीमत में भी भारी बढ़ोतरी हुई है। इससे फिर देश में इसपर बहस हो रही है कि क्या भारत में ईंधन की कीमत बाकी देशों की तुलना में अधिक है। रिपोर्ट में दावा किया गया था कि घरेलू बाजार में करेंसीज की परचेजिंग पावर के हिसाब से भारत में प्रति लीटर एलपीजी की कीमत दुनिया में सबसे ज्यादा है। पेट्रोल के मामले में भारत दुनिया में तीसरे और डीजल में आठवें नंबर पर है। न्यूयॉर्क में रहने वाले अर्थशास्त्री करण भसीन के मुताबिक अगर भारत में पेट्रोल और डीजल की कीमत कई दूसरे देशों के मुकाबले कम है। नीदरलैंड, स्वीडन, स्विटजरलैंड, सिंगापुर, इटली, स्पेन, फ्रांस, साउथ कोरिया और जापान जैसे देश भारी मात्रा में आयात करते हैं, लेकिन इन देशों के मुकाबले भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमत कम है। भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमत ब्रिक्स देशों में सबसे कम है। ब्रिक्स में रूस भी शामिल है जो तेल के प्रमुख निर्यातकों में शामिल है। आसियान देशों से तुलना करने पर भी भारत में कीमतें कम हैं। इसकारण भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमत कई देशों की तुलना में कम है।

आतंकी साजिश नाकाम, राजौरी में सड़क किनारे आईईडी बरामद

जम्मू। जम्मू-कश्मीर में सुरक्षाबलों ने बड़ी आतंकी साजिश को नाकाम किया है। खबर है कि बलों को शनिवार को राजौरी गुरदा रोड पर आईईडी मिला है। इस बात की जानकारी पुलिस ने दी है। खास बात है कि जवानों को सड़क के किनारे संदिग्ध चीज मिली थी। जांच में वस्तु के आईईडी होने का खुलासा हुआ। फिलहाल, मामले में जांच जारी है। राजौरी एसएसपी शीमा नबी कासबा ने जानकारी दी है कि आईईडी को सुरक्षित जगह पर खत्म कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने राजौरी गुरदा रोड पर गुरदा चावा गांव में 'संदिग्ध गतिविधियों' की सूचना पर आईईडी बरामद की थी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि पुलिस के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप्स और भारतीय सेना के दल ने शनिवार सुबह इलाके में तलाशी अभियान चलाया था। एसएसपी ने कहा, 'पुलिस के बॉम्ब स्क्वॉड ने बाद में एसओपी के आधार पर आईईडी को खत्म करने के लिए अपने कब्जे में लिया। इसे बाद में सुरक्षित स्थान पर खत्म कर दिया गया।' खास बात है कि कश्मीर के बारामूला में एक दिन पहले ही आतंकियों ने निर्दलीय सरपंच की हत्या कर दी थी। यह घटना पाटन के गोशबग इलाके में हुई थी, जहां आतंकियों ने मंजूर अहमद बांगरू पर गोलीबारी कर दी थी। अस्पताल में उन्हें मृत घोषित कर दिया था। जम्मू और कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर मनोज सिन्हा ने मृतक के परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की थी। साथ ही उन्होंने दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का भरोसा दिया है। उन्होंने कहा था, 'मैं सरपंच मंजूर अहमद बांगरू पर आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। इस घृणित काम के दोषियों को सजा मिलनी चाहिए। इस दुख की घड़ी में शोकाकुल परिवार के साथ मेरी सांत्वनाएं हैं।

यूक्रेन को हथियारों की सप्लाई करो बंद

नई दिल्ली। बाइडेन प्रशासन द्वारा यूक्रेन को सैन्य सहायता के तौर पर अतिरिक्त 80 करोड़ डॉलर की घोषणा करने के कुछ दिनों बाद रूस ने संयुक्त राज्य अमेरिका को अप्रत्याशित परिणाम भुगतने की चेतावनी दी है। रूस ने यूएस से यूक्रेन को हथियार देने के अभियान को तुरंत बंद करने के लिए कहा है। वाशिंगटन पोस्ट ने एक राजनयिक नोट की समीक्षा की जो कि रूस ने इस सप्ताह अमेरिका को भेजा है। नोट में अमेरिका और नाटो को चेतावनी दी गई है। इसमें कहा गया है कि यूएस और नाटो देशों को यूक्रेन को संवेदनशील हथियार प्रणालियों को देना तत्काल बंद करना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो इसके अप्रत्याशित परिणाम देखने को मिलेंगे। नोट में कहा गया है, "हम संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगियों से यूक्रेन के गैर-जिम्मेदार सैन्यीकरण को रोकने का आह्वान करते हैं। अगर ऐसा नहीं होता है तो क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए इसके अप्रत्याशित परिणाम होंगे।" आपको बता दें कि अमेरिकी सैन्य सहायता पैकेज में आर्टिलरी सिस्टम, आर्टिलरी राउंड, बख़्तरबंद कर्मियों के वाहक और हेलीकॉप्टर शामिल हैं।

सोनिया गांधी समेत आला नेताओं की प्रशांत किशोर के साथ बैठक, गुजरात और हिमाचल में होने वाले चुनावों पर हुआ मंथन

नई दिल्ली। हाल ही में हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में मिली पराजय के बाद कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने शनिवार को एक महत्वपूर्ण बैठक की। समाचार एजेंसी एएनआइ की रिपोर्ट के मुताबिक कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी ने चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर के साथ यह बैठक की जिसमें राहुल गांधी, अंबिका सोनी, दिग्विजय सिंह, मल्लिकार्जुन खड़गे, अजय माकन और केसी वेणुगोपाल जैसे दिग्गज मौजूद रहे। सूत्रों की मानें तो प्रशांत किशोर के कांग्रेस में शामिल होने की अटकलों की पृष्ठभूमि में यह बैठक हुई। कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल ने इस बैठक के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि 2024 में होने वाले आम चुनावों को लेकर प्रशांत किशोर ने एक प्रेजेंटेशन दी। पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी और वरिष्ठ नेताओं के सामने पेश की गई इस प्रेजेंटेशन पर समीक्षा के लिए टीम गठित की जाएगी। यह टीम कुछ समय बाद अपनी रिपोर्ट सौंपेगी जिसके बाद आखिरी निर्णय लिया जाएगा। यह बैठक ऐसे समय हुई है जब आने वाले कुछ महीनों में गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। एक समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक इससे पहले प्रशांत किशोर ने कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी के साथ बातचीत की थी। सोनिया गांधी ने अपने आवास पर यह बैठक बुलाई। सूत्रों की मानें तो यह बैठक इस साल गुजरात और हिमाचल प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस की चुनावी तैयारियों की पृष्ठभूमि में भी हुई। कांग्रेस पांच राज्यों में चुनावी हार के बाद प्रशांत किशोर के साथ फिर से बातचीत शुरू करने की कोशिश कर रही है। पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे कांग्रेस के लिए किसी झटके से कम नहीं थे। इन चुनावों को 2024 के लोकसभा चुनावों का लिटमस टेस्ट माना गया। इन चुनावों में कांग्रेस आम आदमी पार्टी (आप) और तृणमूल कांग्रेस से उभरती चुनौती को बदलने के लिए बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद कर रही थी। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि पीके (प्रशांत किशोर) को कांग्रेस में शामिल होने के बजाय एक सलाहकार की भूमिका निभाते हुए देखा जा सकता है।

पंजाब- सीएम भगवंत मान ने पेश किया 30 दिन का रिपोर्ट कार्ड

चंडीगढ़। पंजाब में आप पार्टी के नेता और सूबे के मुख्यमंत्री भगवंत मान को सत्तारूढ़ हुए एक महीना पूरा हो गया है। इस मौके पर सूबे की सरकार ने आम जनता को राहत देते हुए बड़ा ऐलान किया है। मसलन, एक जुलाई से प्रदेश में हर घर को 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली देने का ऐलान किया गया है। प्रदेश सरकार ने अपने 30 दिन के कार्यकाल का रिपोर्ट कार्ड जारी किया। इसके साथ ही अखबारों में विज्ञापन के जरिए ये दावा किया कि पंजाब में 1 जुलाई से 300 यूनिट मुफ्त बिजली दी जाएगी।

हालांकि, अभी तक मुफ्त बिजली को लेकर भगवंत मान की और से कोई बयान नहीं आया है। इससे पहले भगवंत मान ने दावा किया था कि वो 16 अप्रैल को पंजाब की जनता के लिए बड़ा ऐलान करेंगे। अब सरकार ने अखबारों में विज्ञापनों के जरिए ये घोषणा की है कि पंजाब में 1 जुलाई से 300 यूनिट मुफ्त बिजली दी जाएगी। बता दें कि हाल ही में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मुलाकात की थी। बैठक में 'केजरीवाल की पहली गारंटी' के तहत, 300 यूनिट मुफ्त बिजली कैसे दी जाएगी, इस मसले पर लंबी चर्चा हुई थी। इस मुलाकात के बाद

भगवंत मान ने कहा था कि बहुत जल्द पंजाब के लोगों को एक अच्छी खबर दूंगा। इसके साथ ही सीएम भगवंत मान करीब 800 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र देंगे। चुनाव से पहले पंजाब स्टेट ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड (पीएसटीसीएल) की ओर से चयन प्रक्रिया पूरी हो गई थी। अब सहायक लाइनमैन, लेखा अधिकारी, यूडीसी, एलडीसी, एसडीओ, जेई को नियुक्ति पत्र जारी किए जाएंगे।

नए कोविड मरीजों को लेकर मुख्यमंत्री योगी ने दिए निर्देश, पूरा एनसीआर अलर्ट मोड पर रखें, हालात की गहन समीक्षा करें

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की सीमा से लगे कुछ राज्यों में बीते कुछ दिनों से कोविड के केस में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। एनसीआर के जिलों में भी इसका असर है। गौतमबुद्ध नगर में 70 और गाजियाबाद में 11 पॉजिटिव मरीजों की पुष्टि हुई है। वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत पूरे एनसीआर को अलर्ट मोड में रखा जाए।

गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद में कोविड पॉजिटिव पाए गए मरीजों के सैम्पल लेकर जीनोम सिक्वेंसिंग कराई जाए। इन जिलों के डीएम, सीएमओ से संवाद कर स्थिति की गहन समीक्षा की जाए। ये निर्देश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने टीम 9 के साथ बैठक में अफसरों को दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में वर्तमान में कुल एक्टिव केस की संख्या 507 है। विगत 24 घंटों में 73 हजार 881 कोरोना टेस्ट किए गए, जिसमें 106 नए कोरोना मरीजों की पुष्टि हुई। इसी अवधि में 37 लोग उपचारित होकर कोरोना मुक्त भी हुए। हमें पूरी सावधानी और सतर्कता बरतनी होगी। कोविड टीकाकरण का हमारा महत्वपूर्ण अभियान सफलतापूर्वक चल रहा है। 30 करोड़ 56 लाख से अधिक कोविड टीकाकरण के साथ ही अब तक 103 से ज्यादा वयस्क आबादी को टीके की पहली डोज लग चुकी है, जबकि 86 प्रतिशत लोगों को दोनों खुराक मिल चुकी है। 12 से 14 और 15 से 17 आयु वर्ग के टीकाकरण की प्रगति संतोषप्रद है। इसे और तेज किया जाए। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 18 वर्ष के अधिक आयु के लोगों को बूस्टर डोज दिए जाने का कार्य में तेजी की अपेक्षा है। 700 निजी टीकाकरण केंद्र पर बूस्टर डोज लगवाया जा सकता है। इन टीकाकरण केंद्रों और बूस्टर डोज की महत्ता के बारे में आमजन को जागरूक किया जाए। प्रत्येक दशा में यह सुनिश्चित किया जाए कि एक भी नागरिक टीकाकवर से वंचित न रहे। संचारी रोग और दस्तक अभियान को पूरी तत्परता के साथ संचालित किया जाए। बरेली मंडल में मलेरिया पर फोकस रखें तो आगरा, लखनऊ मंडलों में डेंगू से बचाव के प्रति जागरूकता बढ़ाएं।

मुंबई में एक ही ट्रैक पर आ गई दो यात्री ट्रेनें, बेपटरी हुई 3 बोगियां, कोई हताहत नहीं

मुंबई। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में शुक्रवार देर रात दादर और माटुंगा के बीच एक क्रॉसिंग पर लंबी दूरी की दो यात्री ट्रेनें एक ही ट्रैक पर आ गईं और एक दूसरे से टकरा गईं। मध्य रेलवे (सीआर) के मुख्य प्रवक्ता शिवाजी सुतार ने कहा कि घटना में पुडुचेरी एक्सप्रेस और गंडग एक्सप्रेस शामिल है, जो एक ही रेलवे लाइन पर आ गई और एक ट्रेन के कम से कम तीन डिब्बे पटरी से उतर गए। दोनों ट्रेनों में घबराए यात्रियों ने दावा किया कि उन्होंने बिजली के ओवरहेड तारों पर चिंगारी के साथ कुछ तेज आवाज सुनी। दुर्घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है और सीआर द्वारा अभी तक कोई विस्तृत बयान जारी नहीं किया गया है। जैसे ही पांचवीं लाइन पर यातायात प्रभावित हुआ, दोनों ट्रेनों के अधिकांश यात्री उतर गए, स्टेशनों पर चले गए और घर चले गए।

कोरोना के नए एक्सई वेरिएंट से दहशत बढ़ी

नई दिल्ली। महामारी कोरोना का दंश झेल चुके भारत में इसका वायरस कमजोर होने से थोड़ी राहत जरूर हुई पर अब कोरोना के नए एक्सई वेरिएंट से एक बार फिर से लोगों को अलर्ट कर दिया है। कोरोना के इस नए वेरिएंट से कुल दो लोग महाराष्ट्र और गुजरात में संक्रमित पाए गए हैं, जिससे चिंताएं बढ़ने लगी हैं। क्या है एक्सई वेरिएंट, ओमिक्रोन से कितना खतरनाक है एक्सई वेरिएंट और इसके लक्षण क्या होते हैं, हमने जाना फोर्टिस हीरानंदानी हॉस्पिटल, (वाशी, मुंबई) की डायरेक्टर-इंटरनल मेडिसिन डॉ. फरहा इंगले से।

कोरोनावायरस का नया एक्सई वेरिएंट अधिक खतरनाक नहीं है। यह ओमिक्रोन वेरिएंट का ही सब-वेरिएंट है। ओमिक्रोन के वेरिएंट बीए.1 और बीए.2 का रीकॉम्बिनेंट वेरिएंट है। अभी तक महाराष्ट्र में 1 और गुजरात में 1 मामला सामने आया है। ये दोनों ही केस गंभीर नहीं हैं। इससे कह सकते हैं कि यह नया वेरिएंट बहुत अधिक खतरनाक नहीं है, ये ओमिक्रोन की ही तरह माइल्ड वेरिएंट है। चूंकि, एक्सई वेरिएंट ओमिक्रोन का ही सब-वेरिएंट है, इसलिए इसके लक्षण भी ओमिक्रॉन वेरिएंट के लक्षणों से बहुत मिलते-जुलते हैं। काफी माइल्ड हैं एक्सई वेरिएंट के लक्षण, ऐसे में लोगों को बहुत अधिक डरने, घबराने की जरूरत नहीं है। इसमें हल्का बुखार होना, शरीर में दर्द होना, थकान महसूस करना, सिरदर्द, दिल की धड़कन तेज होना आदि लक्षण नजर आ सकते हैं।

कुछ महीने पहले ही ओमिक्रोन के तेजी से फैलने से लोग काफी डर गए थे, लेकिन ये अधिक खतरनाक साबित नहीं हुआ था और ना ही इस वेरिएंट ने गंभीर रूप से लोगों को

संक्रमित किया था। देश में अधिकतर लोगों ने कोरोना का टीका लगवा लिया है। जिन्हें ओमिक्रोन हुआ था, उनमें तो इसके खिलाफ इम्यूनिटी भी है। ऐसे में एक्सई वेरिएंट अधिक खतरनाक नजर नहीं आ रहा है, क्योंकि अभी पूरी दुनिया में इसका प्रसार नहीं हुआ है। वैसे, ये वेरिएंट तीन महीने से है, लेकिन केसेज नहीं बढ़े हैं। ओमिक्रोन से जितने लोग संक्रमित हुए थे, उनमें से अधिकतर घर पर ही ठीक हुए थे। कितने लोगों ने तो कोविड टेस्ट भी नहीं करवाया था। ऐसे में कोरोना के इस एक्सई वेरिएंट से फिलहाल अधिक घबराने की जरूरत नहीं है।

इतनी बार कोरोनावायरस का म्यूटेंशन हो चुका है कि अभी कुछ भी बोलना बहुत मुश्किल है कि देश में चौथी लहर आएगी या नहीं। हो सकता है कि कोई म्यूटेशन गंभीर साबित हो जाए, जैसे डेल्टा वेरिएंट में हुआ था। लेकिन, फिर ओमिक्रोन बहुत माइल्ड था। ऐसे में अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। कुछ वैक्सीन भी कई तरह के वेरिएंट के खिलाफ प्रभावी साबित नहीं होते हैं। वायरस तीन से छह महीने तो शांत रहता है और फिर वापस आ सकता है। अभी ये महामारी और डेढ़ से दो साल चल सकती है, ऐसे में अभी बोल नहीं सकते कि चौथी लहर कब आएगी। राज्य सरकारों ने हर चीज से प्रतिबंध हटा दिया है। लोग भी अब बेखौफ होकर बिना मास्क के घूमने लगे हैं। ऐसा लग रहा है कि पूरी तरह से कोरोना खत्म हो गया है। लोगों को अभी भी पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। घर से बाहर मास्क लगाएं। सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल रखें। हाथों को अच्छी तरह से साफ रखें। सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें।

संगठन सर्वोच्च, किसी को भी इससे बड़ा बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए : बीएल संतोष

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव बी. एल. संतोष ने 2023 के विधानसभा चुनाव में पार्टी सदस्यों को जीत का मंत्र देते हुए कहा कि संगठन सर्वोच्च है और किसी को भी खुद को इससे बड़ा बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। संतोष राजस्थान के दो दिवसीय दौरे पर हैं। उन्होंने कहा कि हाल ही में हुए चार विधानसभा चुनावों के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी अपनी जीत का श्रेय संगठन को दिया। संतोष ने आगे घोषणा की कि टिकट वितरण के दौरान कोई वरीयता नहीं दी जाएगी।

संतोष ने कहा, "कुछ लोग इस प्रवृत्ति से प्रभावित हो सकते हैं और राज्य भाजपा अध्यक्ष सतीश पूनिया को और दुश्मन मिल सकते हैं, लेकिन हमें परवाह नहीं है और सभी को पार्टी की जीत के लिए काम करना चाहिए।" भाजपा के संगठन नेता ने आगे कहा, "पार्टी महत्वपूर्ण है, व्यक्ति नहीं। पार्टी को आगे ले जाने और चुनाव की तैयारी के लिए सभी नेताओं को एकजुट होकर काम करना होगा।" उन्होंने कहा कि पार्टी में गुटबाजी के लिए कोई जगह नहीं है। संगठन से बड़ा कोई व्यक्ति या पदाधिकारी नहीं है। विधानसभा चुनाव के बाद पीएम मोदी और यूपी के सीएम ने भी अपनी जीत का श्रेय पार्टी को दिया था। इसलिए, संगठन की ताकत पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

भाजपा प्रदेश पदाधिकारियों, मोर्चा अध्यक्षों एवं अन्य कार्यकताओं को संबोधित करते हुए संतोष ने हिदायत देते हुए कहा कि बयान पार्टी लाइन के आधार पर ही दिए जाएं। साथ ही उन्होंने कहा कि 2023 के चुनाव से पहले सभी को राज्य में पार्टी का आधार बढ़ाने के उपायों पर ध्यान देना होगा। गुरुवार को भाजपा नेता रात्रिभोज के लिए पूनिया के आवास पर गए थे और दोनों नेताओं ने रात 1 बजे तक पार्टी की रणनीति पर लंबी चर्चा की।

चिंतन मनन

शहरों पर दबाव

शहर आकांक्षाओं, सपनों और अवसरों से बने होते हैं। लोग स्तरीय शिक्षा, रोजगार, बेहतर जीवन, बड़े बाजार और ऐसी ही दूसरी संभावनाओं की तलाश में शहरों की ओर आते हैं जो उनकी मौजूदा परिस्थिति में उपलब्ध नहीं होतीं। ऐसे ही तमाम कारणों के चलते गांव, कस्बे, छोटे शहर, बड़े शहर और महानगरों के बीच लोगों के आवागमन का एक सतत चक्र चलता रहता है। मौजूदा समय में यह आंकड़ा 55 फीसद का है। अनियोजित शहरीकरण शहरों पर बहुत अधिक दबाव डालता है और शासन द्वारा निर्धारित नियोजन व क्रियान्वयन की चुनौती बरकरार है। सुशासन का अभिलक्षण है कि संतुलन पर पूरा जोर हो, जहां विकासोन्मुखी नीतियां न्यायपरक तो हों ही, साथ ही इसे बार-बार दोहराया भी जाता रहे। शहरी विकास से संबंधित योजनाएं कई आयामों में मुखर हुई हैं, जिसमें स्मार्ट सिटी के तहत ऐसे शहरों को बढ़ावा देना है जो मुख्यतः समावेशी सुविधाओं के साथ नागरिकों को एक गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान कर सकें। इसके अलावा स्वच्छ और टिकाऊ पर्यावरण के समावेशन से भी यह अभिभूत हों। सरकार के अमृत मिशन में हर घर में पानी की आपूर्ति और सीवेज सुविधा के साथ नल की व्यवस्था की बात है। स्वच्छ भारत मिशन जहां शौच से मुक्त भारत की बात करता है, वहीं इसमें नगरीय ठोस अपशिष्ट का शत-प्रतिशत वैज्ञानिक प्रबंधन सुनिश्चित करना भी निहित है। देश में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना और अपशिष्ट जल का समुचित निस्तारण पहली और बड़ी चुनौती है। जिस प्रकार शहरों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है, भूजल तेजी से खत्म हो रहा है, नदियां सूख रही हैं और जलवायु परिवर्तन का अनचाहा स्वरूप शहरों पर असर डाल रहा है, उससे शहरों की दुश्वारियां बढ़ती जा रही हैं। एक आदर्श शहर तभी विकसित हो सकता है, जब उसके गांव कायम रहें। शहर भी तभी बना रह सकता है जब गांव भी विकसित हों। वैसे भी भारत गांवों का देश है। कोविड-19 के प्रकोप के चलते यह बात और पुख्ता हुई है कि केवल शहरी विकास व सुधार से ही सुशासन को कायम रखना संभव नहीं है। कृषि विकास दर को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उदरपूर्ति से लेकर आसान जीवन आज भी गांवों पर निर्भर है। ऐसे में उप शहरी क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बुनियादी ढांचे में निवेश पर जोर दिया जाना एक अनिवार्य सत्य के रूप में स्वीकार करना चाहिए। शहर जितने सघन और विकास के चरम पर हैं, उनकी हवा और पानी उतना ही दूषित है। मलिन बस्तियों की तादाद तेजी से बढ़ रही है। भारत की मलिन बस्तियों में रहने वाली सत्तावन फीसद आबादी तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में है। यह राज्यों की जिम्मेदारी है कि वे अपने नागरिकों को आवास और अन्य बुनियादी सुविधाएं प्रदान करें। शहरी सुधार की दिशा में संभावनाएं भी हमेशा उफान पर रहती हैं और शहरी भावना भी उथल-पुथल में रहती है।

बदली राजनीति है !

जिन बातों का अक्सर ।
करते थे विरोध ।।
करते अब समर्थन ।
शुरू हो गया शोध ।।
बदली राजनीति है ।
नए को अपनाना ।।
बदला है माहौल ।
अलग कुछ कर जाना ।।
चलनी नई चाल है ।
नया है उमंग ।।
है बदलनी करवट ।
प्रस्तुत नया रंग ।।
बना रहे उत्साह ।
जो अपने सहयोगी ।।
लिए टटोल मन ।
है जो कुछ उपयोगी ।।

–कृष्णेन्द्र राय

धर्म वहीं जहां प्रेम व सद्भावः जहाँ हिंसा वैमनस्य वहां अधर्म और पाखण्ड

पिछले एक पखवाड़े के भीतर देश के अनेक राज्यों से साम्प्रदायिक हिंसा की वारदातों के अफसोसनाक समाचार सुनने को मिले। निश्चित रूप से दुनिया का कोई भी सभ्य समाज हिंसा,लूट,बस्ती में आगजनी करने, हत्या,पत्थरबाजी, गोलीबारी, किसी समुदाय के धर्मस्थल पर किसी अन्य समुदाय से संबंधित ध्वज फहराने,लाऊडस्पीकर पर समुदाय विशेष को गलियां देने,उन्हें धमकाने और दहशत फैलाने आदि दुष्कृत्यों को सही या जायज नहीं ठहरा सकता। और यदि कोई वर्ग ऐसा है जिसे इसतरह के दो समुदायों को विभाजित करने वाले हालात पर गर्व अथवा खुशी है या उसे इन हालात से किसी तरह का लाभ मिलता है तो निःसंदेह वह वर्ग न केवल असभ्य है बल्कि वह देश और मानवता का दुश्मन भी है चाहे वह किसी भी धर्म अथवा समुदाय का क्यों न हो।

चूँकि सत्ता के नुमाइंदे प्रायः देश के लोगों को यह सलाह देते हैं कि उन्हें 'आपदा में भी अवसर' की तलाश करनी चाहिए और मंहगाई या बेरोजगारी पर हाय तौबा करने के बजाये अपनी सोच नकारात्मक नहीं बल्कि सकारात्मक रखनी चाहिये। इसीलिये बावजूद इसके कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में रामनवमी के जुलूसों के दौरान हिंसक वारदातों की जितनी खबरें इसबार सुनने को मिलीं,पहले कभी नहीं सुनी गयीं। परन्तु इन साम्प्रदायिक हिंसक वारदातों के ठीक विपरीत इसी राम नवमी में देश के अनेक भागों से साम्प्रदायिक सद्भाव की भी अनेक अनूठी खबरें सुनाई दीं हैं। यह और बात है कि गोदी मीडिया को हिंसा व आगजनी की चपेट में आई इंसानी बस्तियों में उठती आग की लपटें और हवा में तलवारें लहराते और दहशत फैलाने वाले धार्मिक उद्घोष व चीख पुकार आदि तो उनकी अपनी टी आर पी बढ़ाने के लिये दिखाई व सुनाई दिये। परन्तु देश को सद्भाव का सन्देश देने वाली खबरें नजर नहीं आईं। बेशक देश का एक बहुत बड़ा अमनपसंद वर्ग इस समय देश के सत्ता के संरक्षण से पैदा होने वाले विभाजनकारी व सामाजिक ध्रुवीकरण के हालात से अत्यंत निराश हो चुका है। परन्तु अभी भी इसी देश में रोजाना

कहीं न कहीं से ऐसी खबरें सुनाई देती हैं जिनसे यह उम्मीद बंधती है कि देश पर छाये हिंसा व नफरत के काले बादल आज नहीं तो कल जरूर छंटेंगे।

उदाहरण तौर पर झारखण्ड की राजधानी रांची में बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने रामनवमी के जुलूस का शानदार स्वागत किया। इस अवसर पर मुस्लिम भाइयों ने राम नवमी जुलूस में शामिल अपने हिन्दू भाइयों को मिठाई,गुड़, चना, फल आदि खिलाया और शीतल पेय भी पिलाया। इतना ही नहीं बल्कि मुस्लिम समुदाय से संबंधित कई संस्थाओं के पदाधिकारियों ने शोभायात्रा से जुड़े विशिष्ट हिन्दू पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट किया तथा उन्हें पगड़ी बांध कर सम्मानित किया। प्राप्त समाचारों के अनुसार रांची की सेंट्रल मुहर्रम कमेटी ,रांची पब्लिक स्कूल तथा इमाम बख़्श अखाड़ा सहित अनेक मुस्लिम संस्थाओं,मदरसों व स्कूलों ने जुलूस में शामिल लोगों का स्वागत किया। दोनों समुदाय के लोग एक-दूसरे से गले मिले एक दूसरे को मिठाइयां खिलाईं। ऐसा ही समाचार झारखण्ड के ही हजारीबाग से भी प्राप्त हुआ है। बताया जाता है कि हजारी बाग जिले की रामनवमी की शोभा यात्रा अपनी भव्यता को लेकर पूरे देश में मशहूर है। । यहाँ की रामनवमी साम्प्रदायिक सौहार्द के लिये भी प्रसिद्ध है। हमेशा की तरह इस बार भी रामनवमी में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने बढ़ चढ़ कर इसमें अपनी सहभागिता दर्ज की। यहाँ भी रामभक्तों का मनोबल बढ़ाते हुये मुस्लिम समुदाय के लोगों ने उन्हें जगह-जगह पर सम्मानित किया। इतना ही नहीं बल्कि हिन्दू भाइयों ने मुस्लिम समुदाय के लोगों के सर पर केसरिया पगड़ी बाँध उनसे गले मिलकर सौहार्द की मिसाल पेश की। इनमें अनेक मुसलमान तो स्वयं रोजा धारण किये होने के बावजूद रामनवमी के जुलूस में हर्षोल्लास से शरीक हुये और खुद भूखे (रोजा) रहकर भी अपने राम भक्त भाईयों को जलपान कराया। झारखण्ड के ही पलामू,मेराल,मेदिनीनगर व गढ़वा आदि जैसे कई स्थानों से भी ठीक इसी तरह के सदभावपूर्ण रामनवमी आयोजन के समाचार मिले हैं।

कुछ ऐसी ही 'सकारात्मकता' से परिपूर्ण खबरें उसी राजस्थान राज्य से आईं जहाँ के करौली क्षेत्र में कुछ दिनों पहले दंगाइयों ने उपद्रव व आगजनी की घटनाओं को अंजाम दिया था। अब इसी राजस्थान के जयपुर,अजमेर व जैसलमेर जैसे प्रमुख शहरों में रामनवमी के जुलूस पर मुस्लिम समुदाय की ओर से फूल बरसाकर उनका स्वागत करने तथा मिठाइयां व शरबत आदि वितरित करने के समाचार प्राप्त हुये हैं। देश के कई जगहों से जहाँ ऐसे समाचार पहले भी आये और इस बार की रामनवमी के अवसर पर भी सुने गये कि मस्जिद पर कुछ धर्म विरोधी असामाजिक तत्वों द्वारा जबरन भगवा झंडा लहराया गया। वहीं केंद्र शासित प्रदेश दमन दीव से मिलने वाली खबर शांति के पक्षधर भारतवासियों में बेशक "सकारात्मकता " का संचार करती है। दमन दीव के खारीवाड़-मिटनावड़ में स्थित राम मंदिर के शिखर पर मुस्लिम समाज के समाजसेवी शौकत मिठाणी ने भगवा ध्वज अपने हाथों से स्थापित किया। और रामनवमी के जुलूस में भगवान राम की पालकी अपने कन्धों पर उठाकर प्रेम,सद्भाव व भाईचारे का सुबूत पेश किया। बताया जाता है कि यह राम मंदिर शौकत मिठानी ने अपने पैसों से बनवाकर स्थानीय हिन्दू समाज को भेंट किया है।

अभी कुछ दिनों पूर्व ही बिहार राज्य के चंपारण से दुनिया का सबसे बड़ा विराट रामायण मंदिर बनाने की तैयारियों की खबर सामने आई थी। बिहार के एक मुस्लिम व्यक्ति ने राज्य के पूर्वी चंपारण जिले के कैथवलिया इलाके में बनने वाले इस मंदिर हेतु 2.5 करोड़ रुपये मूल्य की अपनी निजी जमीन दान में दी है। पटना के महावीर मंदिर ट्रस्ट केअध्यक्ष आचार्य किशोर के अनुसार इश्तियाक अहमद खान पूर्वी चंपारण के रहने वाले हैं तथा वर्तमान में गुवाहाटी में कारोबार कर रहे हैं। इश्तियाक अहमद खान ने ही 2.5 करोड़ रुपये की जमीन विराट रामायण मंदिर निर्माण हेतु दान की है। योजनानुसार यह विराट रामायण मंदिर विश्व के प्रसिद्ध 12 वीं सदी के अंगकोरवाट के मंदिर से भी विराट होगा तथा इसपर लगभग 500 करोड़ रुपये की लागत आएगी।इसी बिहार के मुजफ़्फरपुर जिले के मुहम्मदपुर गांव में कुछ उपद्रवियों ने राम नवमी के दिन एक मस्जिद पर भगवा झंडा लहराकर अपनी भी 'सभ्यता ' का परिचय दिया था। कहना गलत नहीं होगा कि धर्म वहीं वहीं है जहां प्रेम व सद्भाव कायम है और जहाँ भी हिंसा वैमनस्य है वहां धर्म नहीं बल्कि अधर्म और पाखण्ड का ही साम्राज्य है।

मोहन भागवत–मुंगेरीलाल के हसीन सपने

आज प्रभाती में समाचार पत्र के माध्यम से यह शुभ जानकारी मिली की भारत फिर से अखंड भारत बनेगा .सबसे पहले चश्मा पौंछा और फिर से समाचार पढ़ा ,तो जंचा की सही लिखा हैं .भागवत जी अखंड भारत तो नहीं बना पायेगें पर महाभारत जरूर कराएँगे .सबसे पहले अखंड भारत की व्याख्या बताएं .अखंड यानी ऐतहासिक या राजनैतिक नक्शा के अनुसार भारत की कल्पना . इतिहास में पढ़ा था की भारत वर्ष अफगानिस्तान से जावा ,सुमात्रा तक फैला था .और याद के आधार पर जरूर कह सकता हूँ और भी विस्तृत होगा . महाभारत की घटना में सुई की नौक बराबर जमीन न देने पर कौरव पांडव युध्य हुआ था और भगवान कृष्ण स्वयं मौजूद थे वे नहीं दिला पाएं जमीन .आज हमारे देश में सर्वमान्य नेता कौन हैं ?चुने हुए प्रतिनिधि हमेशा एक को हराकर जीतते हैं उनमे कलुषता रहती ही हैं .बहुमत के आधार पर सत्ता पा सकते हैं पर दिलों पर राज नहीं कर सकते . अखंड भारत की कल्पना का उद्देश्य क्या हैं समझ से परे लगता हैं .कारण पाकिस्तान ,अफगानिस्तान ,बांग्ला देश ,बर्मा आदि को अधिग्रहित करेंगे यानी हम भी विस्तारवादी नीति को बढ़ावा देंगे .क्या अन्य पडोसी राष्ट्र इतनी जल्दी स्वीकार लेंगे .आज रूस और यूक्रेन का युध्य किस बात पर लड़ा जा रहा हैं .अहम और अस्तित्व की लड़ाई .कोई भी किसी

की अधीनता नहीं स्वीकार कर सकता हैं .यदि यह भाव वर्तमान में हमारे पडोसी चाहे तो क्या आप स्वीकार करेंगे ? यह असाध्य रोग हैं ,और असाध्य रोग और रोगी के लिए चिंता नहीं करनी चाहिए मरीज और चिकित्सक को .वर्तमान में सब शक्तिशाली हैं और शक्ति हीन कमजोर को मानना अज्ञानता होती हैं .जैसे आप अपनी मातृ भूमि के प्रति दीवानी रखते हैं वैसे सब रखते हैं .इसलिए इस बात में कोई दम नहीं हैं . हमें अखंड भारत की अपेक्षा शिक्षित ,सम्पन्न,सुख शांति मय बनाने का प्रयास करे .जो पूर्व में हमारे इष्ट जैसे राम ,कृष्ण महावीर ,बुद्ध आदि द्वारा प्रतिपादित मूल सिद्धांतों को भारत में स्थापित करे .भाषणों में नहीं वास्तविकता में .कोरी लफ़्फाजी से कुछ नहीं होगा .आज अशांति ,हिंसा ,जातिवाद ,भ्ष्टाचार ,अनाचार दुराचार व्यभिचार इतनी अधिक मात्रा में व्याप्त हैं जिनको दूर करना पहली प्राथमिकता होगी .आज हमारी आबादी इतनी अधिक हैं और अन्य देशों को बनाकर अखंड भारत की व्यवस्था बनाना बहुत कठिन होगा .अविभाजित भारत न होता तो वर्तमान में हमारा जीना दुश्वार हो जाता ,कारण जातिगत वैमन्सयता ,कटुटता इतनी गहरी होती जो अकल्पनीय होती . थोड़ा हैं थोड़ी की जरुरत हैं .जो हैं उसी को सँवारे सजाएँ .हमारे हमारे नेता उस पार्टी को ही वर्षों से कोसते आ रहे हैं और वसुदैव कुटुंबकम की बातें करते हैं .ये दोगलापन कब खतम होगा .एक बात ध्यान रखना कोई भी जीव किसी अन्य को नुक्सान नहीं पहुँचता।

मस्जिदों पर लगे भोपुओं पर न्यायालय का आदेश क्यों लागू नहीं है ? इस विषय पर विशेष संवाद

अवैध भोंपू हटाने का न्यायालय का आदेश होते हुए उसका पालन न करनेवाले पुलिसकर्मियों पर कठोर कार्यवाही करें ! – श्री. संतोष पाचलग, याचिकाकर्ता

अवैध भोपुओं के विरुद्ध हमारे द्वारा प्रविष्ट जनहित याचिका के कारण मुंबई उच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र के सभी धार्मिक स्थलों पर लगे हुए अवैध भोंपू हटाने का स्पष्ट आदेश वर्ष 2016 में दिया है, तब भी मुंबई और महाराष्ट्र पुलिस ने उस पर अमल नहीं किया । इसलिए वर्ष 2018 में हमने उसके विरुद्ध मुंबई उच्च न्यायालय में पुनः आदेश की अवहेलना करनेवाली याचिका प्रविष्ट की । सूचना के अधिकारों के अंतर्गत महाराष्ट्र की पुलिस से अवैध भोंपू और ध्वनिवर्धक यंत्रों से संबंध में जानकारी मंगवाई थी, तब केवल 40 प्रतिशत लोगों ने जानकारी दी । शेष पुलिसकर्मियों ने जानकारी देने में टालमटोल की । 40 प्रतिशत में से 2 हजार 904 ध्वनिवर्धक अवैध हैं तथा उनमेंसे 1766 भोंपू मस्जिदों और मदरसों में लगे हुए हैं । मुंबई में उनकी संख्या लगभग 900 से अधिक है । वास्तविक रूप से यह संख्या तीन गुना हो सकती है । कोरोना काल में यह याचिका नहीं चली; परंतु जनता को न्याय देने के लिए यह अवहेलना याचिका शीघ्रातिशीघ्र चलाकर नियमों का भंग करनेवाले और न्यायालय के आदेश का पालन न करनेवाले पुलिसकर्मियों पर कठोर कार्यवाही की जाए, ऐसी मांग नई मुंबई के याचिकाकर्ता श्री. संतोष पाचलग ने की है । वे हिन्दू जनजागृति समिति द्वारा आयोजित 'मस्जिदों पर लगे भोपुओं पर न्यायालय का आदेश लागू क्यों नहीं ?', इस विशेष ऑनलाइन विशेष संवाद में बोल रहे थे ।

सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता गौरव गोयल ने कहा कि, मस्जिदों पर लगे अवैध भोपुओं के विरोध में न्यायालय ने कार्यवाही के आदेश देने पर उनपर अमल करना आवश्यक था; परंतु वैसा न होने के कारण यह न्यायालय का अपमान हुआ है । जिस स्थान पर अवैध भोपुओं के विरुद्ध कार्यवाही नहीं की गई है, उनके विरुद्ध अब न्यायालय को कार्यवाही करनी चाहिए । मस्जिदों पर लगे हुए भोपुओं के कारण बडी मात्रा में ध्वनिप्रदूषण हो रहा है । इनके कारण नागरिकों के साथ ही विद्यार्थीवर्ग को भी इसका कष्ट हो रहा है ।

हिन्दू जनजागृति समिति के प्रवक्ता श्री. नरेंद्र सुर्वे ने कहा कि, मुसलमानों में वहाबी, सुन्नी, शिया, सलाफी आदि अनेक जातियां हैं तथा वे एक दूसरे की मस्जिदों में नहीं जाते । इसलिए एक अजान समाप्त होने पर दूसरे की प्रारंभ होती है । इसलिए पांच बार नहीं अपितु 25 से अधिक बार दिन में अधिक समय तक अवैध अजान गैर मुस्लिम जनता को नाहक सुननी पडती है । यह बहुसंख्यक हिन्दू समाज पर अन्याय है । उसमें 'हमारा अल्लाह ही सर्वश्रेष्ठ है !' यह कहना अन्य धर्मियों की भावनाएं आहत करने के समान है । मुसलमानों की चापलूसी करने के लिए राजनीतिक नेता अवैध भोपुओं की समस्या का समाधान नहीं करते ।

शिव का राजः शिव की मुक्तिः उमा का हठ...!

मौजुदा राजनैतिक माहौल में अपने आपको उपेक्षित समझ रही मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री साध्वी उमा भारती ने एक बार फिर अपने हठयोग का प्रयोग कर रायसेन किला स्थित भगवान शिव के मंदिर के ताले खुलवाकर शिवलिंग का अभिषेक करने का संकल्प लिया है। उनका संकल्प है कि जब तक रायसेन किला स्थित शिव मंदिर के ताले खोलकर उन्हें अभिषेक नहीं करने दिया जाता है तब तक वे अन्न ग्रहण नहीं करेगी। उल्लेखनीय है कि रायसेन की पहाड़ी पर स्थित प्राचीन किले में सोमेश्वर महोदव का मंदिर है, जिसके ताले साल भर में एक बार महाशिवरात्रि पर शिवभक्तों के लिए खोले जाते है और उसी दिन उनका जलाभिषेक और पूजा होती है, अब उमाश्री इस मंदिर के ताले खुलवाने की जिद पर है। इस बार वे हठ जरूर कर रही है किंतु उनके स्वर शासन-प्रशासन विरोधी नहीं है, उन्होंने अपना गंगाजल पात्र ताले खुलने तक के लिए कलेक्टर को सौंप दिया है और कहा है कि ताले खुलने पर वे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के साथ यहां आकर जलाभिषेक करेगी और उसके बाद ही अन्न ग्रहण करेगी, अर्थात् कुल मिलाकर इस बार उमाश्री के तेवर तीखे नहीं है और वे धैर्य और शांति से अपनी जिद पूरी करवाना चाहती है, उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों उन्होंने सार्वजनिक रूव से शिकायत की थी कि मुख्यमंत्री शिवराज जी उनसे बात नहीं करते, किंतु जब शिवराज ने उन्हें बुलाकर उनके गिले-शिकवे सुन लिए तो फिर उमाश्री संतुष्ट हो गई।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि उमा भारती ने ही 2003 में दिग्विजय शासन के दशक को भंग कर यहाँ भाजपा की सरकार कायम की थी किंतु वे ज्यादा दिन मुख्यमंत्री नहीं रह पाई और न्यायालयीन गैर जमानती वारंट के प्रकरण में उन्हें पद से इस्तीफा देकर बाबूलाल गौर को कुर्सी सौंपना पड़ी थी गौर साहब भी अधिक समय मुख्यमंत्री नहीं रह पाए और

शिवराज जी मुख्यमंत्री बन गए, अर्थात् 2015 से लेकर अब तक यदि कमलनाथ जी के शासनकाल के पन्द्रह महीनें निकाल दिए जाए तो तब से शिवराज सिंह जी ही राज्य के मुख्यमंत्री है और वे मध्यप्रदेश के इतिहास में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का कीर्तिमान स्थापित कर रहे है।

हाँ, तो बाद साध्वी उमा भारती के हठ की चल रही थी, उमाश्री के तीखे तेवरों के कारण उन्हें अग्निशलाका नैत्री (फॉयर ब्राण्ड लीडर) कहा जाता रहा है, उमा के तेवरों से अब तक मध्यप्रदेश थरार्ता रहा है, कई बार उन्होंने क्रोध में हाथ उठाने का भी कृत्य किया, जिसका उदाहरण अपने ही समर्थक अनिलराम को सार्वजनिक तौर पर मारा गया थप्पड़ है। यही नहीं उन्होंने एक बार तो बागी तेवर अपनाकर भाजपा के खिलाफ नई पार्टी का गठन भी किया था, 2013 में भाजपा में वापसी के बाद भी उमा के तेवर पूर्ववत ही रहे। केन्द्रीय मंत्री रहते 2019 में उन्होंने बिना आलाकमान की पूर्व मंजूरी के चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया था और अब फिर 2024 का चुनाव लड़ने की घोषणा की है।

उमाश्री का यह राजनीतिक इतिहास रहा है कि जब-जब उन्होंने पार्टी द्वारा अपने आपको उपेक्षित महसूस किया, तब तब उन्होंने अपने तीखे तेवर अपने दल और सरकार को दिखाये है, वे चूंकि साध्वी रहते हुए हिन्दूत्व की बड़ी पैरोकार रही है, इसलिए उनको देशव्यापी समर्थन भी प्राप्त है, उनका स्वभाव भावुक व अस्थिर है, इसलिए वे कोई भी फैसला भावुकता में बिना उसके परिणाम की कल्पना किये ले लेती है। अर्थात् कुल मिलाकर वे अन्य उन स्थापित नेताओं से अलग है जो काफी सोच समझकर भावी फैसला लेते है। वे घोषित रूप से अडवानी जी की समर्थक शिष्या रही है और अटल-अडवानी के शासनकाल में उनका राजनीतिक रूतबा काफी शीर्ष पर था, किंतु नरेन्द्र भाई मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद उनकी राजनीतिक स्तर पर पूछ-परख काफी कम हो गई, अल्पकाल के लिए वे केन्द्रीय मंत्री रही, किंतु 2019 के बाद वे अपने आपको काफी उपेक्षत महसूस कर रही है और इसी धुन में धार्मिकता की आड़ में वे राजनीतिक नेतृत्व विरोधी बयानबाजी या हठबाजी का फैसला ले लेती है, जैसाकि उन्होंने इस बार रायसेन किले स्थित सोमेश्वर मंदिर के ताले खोलने को लेकर लिया है, फिलहाल तो मुख्यमंत्री या प्रशासन की और से ताले खोलने की कोई तैयारी दिखाइ९ नहीं दे रही है, देखतें है उमाश्री कब तक सत्याग्रह जारी रखती है?

महिलाओं को 50 फीसदी किराए में छूट

शिमला 15 अप्रैल (वार्ता). हिमाचल प्रदेश में महिलाओं को बस किराए में 50 प्रतिशत की छूट और राज्य में 125 यूनिट तक मुफ्त घरेलू बिजली की सुविधा दी जाएगी. मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने शुक्रवार को हिमाचल दिवस पर चंबा में आयोजित कार्यक्रम में ये घोषणाएं कीं .

हिमाचल दिवस पर चंबा में सीएम जयराम ने की घोषणाएं

उन्होंने कहा कि हिमाचल में महिलाओं से बस किराया 50 प्रतिशत लिया जाएगा जबकि प्रदेश में 125 यूनिट तक निशुल्क घरेलू बिजली की सुविधा दी जाएगी. इससे पहले 60 यूनिट तक निशुल्क घरेलू बिजली की सुविधा दी जा रही थी. इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रो में पानी का बिल माफ करने की बात कही है. उन्होंने बताया कि प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में पानी के बिलों से जलशक्ति विभाग को 30 करोड़ की आय होती है.

श्री ठाकुर ने चंबा में मिनी सचिवालय के निर्माण की घोषणा भी की. उन्होंने कहा कि इस बात की खुशी है कि वो चंबा के चैगान

125 यूनिट तक नि :शुल्क घरेलू बिजली की सुविधा

मैदान में पहली बार राज्य स्तरीय हिमाचल दिवस के कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि पैरामेडिकल स्टाफ ने लोगों का जीवन बचाने के लिए जो प्रयास किए हैं, वो प्रशंसनीय हैं. ऐसे लोगों का हम जीवन भर आभार व्यक्त करने के साथ-साथ में उनका ऋण चुकता नहीं कर सकते. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी ने कहा था कि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है, बचाओ एकमात्र रास्ता है और बचाव के लिए उपाय बताए गए थे. इनमें से सबसे बेहतरीन तरीका यह था कि वैक्सीन बंद करके तैयार होनी चाहिए.

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने निर्णय किया कि जिन बुजुर्गों की वजह से हमने दुनिया को

हिमाचल के मेहनती लोगों ने चुनौतियों को अवसर में बदला : मोदी

नयी दिल्ली 15 अप्रैल (वार्ता). प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हिमाचल प्रदेश दिवस पर राज्य के लोगों को शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि उन्होंने अपनी मेहनत और ईमानदारी से चुनौतियों को अवसरों में बदल दिया है. हिमाचल प्रदेश दिवस पर अपने विशेष शुभकामना संदेश में श्री मोदी ने शुक्रवार को कहा, ''हिमाचल दिवस पर देवभूमि के सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं. ये बहुत सुखद संयोग है कि देश की आजादी के 75वें वर्ष में, हिमाचल प्रदेश भी अपना 75वां स्थापना दिवस मना रहा है. आजादी के अमृत महोत्सव में, हिमाचल प्रदेश में विकास का अमृत हर प्रदेशवासी तक निरंतर पहुंचता रहे, इसके लिए हम सभी के प्रयास जारी हैं.''

हिमाचल की मजबूती की नींव हमने रखी : कांग्रेस

नयी दिल्ली, 15 अप्रैल (वार्ता). कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश के स्थापना दिवस पर शुक्रवार को खुद के काम की तरीफ करते हुए कहा कि उसके प्रयास के कारण ही हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ और उसी ने हिमाचल को प्रगति के पथ पर लाने का भी काम किया. कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने राज्यस्थापना दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए कहा ''प्राकृतिक सुंदरता व धार्मिक परम्पराओं का प्रतीक है हिमाचल प्रदेश. आशा करता हूँ,आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश प्रगति की नयी ऊंचाइयां प्राप्त करे. राज्य के स्थापना दिवस पर हिमाचल प्रदेश के सभी लोगों को मेरी शुभकामनाएं.''

देखा है, दुनिया को सीखा है समझा है, आज देखते हैं कि वो कई कठिन परिस्थितियों से गुजरते है. ऐसे में उनकी मदद का निर्णय लिया. हमने तय किया कि बुजुर्ग भीड़ का हिस्सा नहीं बनेंगे.

देश को 10 साल में रिकॉर्ड संख्या में नए डॉक्टर मिलेंगे : मोदी

भुज में दो सौ बेड़ वाला सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल राष्ट्र को समर्पित

भुज/ दिल्ली 15 अप्रैल (वार्ता). प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को गुजरात के भुज में दो सौ बेड़ वाले के.के. पटेल सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल राष्ट्र को समर्पित करते हुए शुक्रवार को कहा कि देश को आने वाले 10 साल में रिकॉर्ड संख्या में नए डॉक्टर मिलने वाले हैं.

श्री मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अस्पताल राष्ट्र को समर्पित करते हुए कहा कि यह सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल कच्छ के लाखों लोगों को सस्ती और बेहतरीन इलाज की सुविधा उपलब्ध करायेगा. उन्होंने कहा,'' ये हमारे सैनिकों, अर्धसैनिक बलों के परिवारों को और व्यापार जगत के अनेक लोगों के लिए भी उत्तम इलाज की गारंटी बनकर सामने आयेगा.देश के हर जिले में मेडिकल कॉलेज के निर्माण का लक्ष्य हो या फिर मेडिकल एजुकेशन को सबकी पहुंच में रखने के प्रयास, इससे आने वाले 10 सालों में देश को रिकॉर्ड संख्या में नए डॉक्टर मिलने वाले हैं. आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन से मरीजों के लिए सुविधाएं और बढ़ेंगी. आयुष्मान हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन के माध्यम से आधुनिक और क्रिटिकल हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को जिला और ब्लॉक स्तर तक पहुंचाया जा रहा है.'' प्रधानमंत्री ने गुजराती में कहा,'' आनो लाभ आपणा कच्छ ने तो तो मणवानो ज छे (इसका लाभ अपने कच्छ को तो मिलने वाला है). कच्छ की विशेषता है कि कच्छी बोलो फिर वे पूछते नहीं हैं कि आप किस गांव के हैं, किस जाति के हैं. आप तुरंत ही उसके हो जाते हैं. गुजरात आज चारों दिशा में प्रगति कर रहा है. देश भी इसे नोट कर रहा है.''

सस्ती कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सुविधाएं मिलेंगी

श्री मोदी ने कहा कि भुज में अस्पताल बनने से लोगों को सस्ती कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सुविधाएं मिलेंगी. दो दशक पहले गुजरात में नौ मेडिकल कॉलेज में केवल 1,100 सीट थीं. आज राज्य में एक एम्स है और 36 से अधिक मेडिकल कॉलेज हैं जिनमें 6000 बच्चों को डॉक्टर बनाने की व्यवस्था है. अहमदाबाद, राजकोट मेडिकल कॉलेज के उन्नयन का काम चल रहा है. भावनगर मेडिकल कॉलेज के उन्नयन का काम लगभग पूरा हो गया है. अहमदाबाद में सिविल अस्पताल 1500 बेड वाला है. मातृ और शिशु के लिए 800 बेड वाले अस्पताल में रिसर्च का काम चल रहा है. उन्होंने कहा,'' मुझे आपसे एक बात करनी है. हमारे यहां कितने भी अस्पताल हों उससे समस्या का समाधान नहीं हो सकता. इन सब मुसिबतों का समाधान है कि हम समाज के अंदर जागृति लाएं. हम सब अपने कर्तव्यों का पालन करें. ऐसा स्थिति बनाएं कि अस्पताल जाना ही ना पड़े. आज अस्पताल के उद्घाटन पर मुझे शुभकामना देनी हो तो मैं शुभकामना दूं कि अपने के के पटेल चैरीटेबल ट्रस्ट ने करोड़ो रुपये से अस्पताल बनाया पर भगवान करे कि किसी को अस्पताल में आना ही ना पड़े. अस्पताल खाली ही रहे. अस्पताल कब खाली रह सकती है जब हम गंदगी से नफरत करेंगे. अपने आस-पास स्वच्छता रखेंगे. इससे लोग बीमार ही नहीं होंगे. पीने के लिए शुद्ध पानी हो. समाज ने भी इसमें सहयोग दे रहा है. इस कोरोना की लड़ाई में शरीर मजबूत हो तो लड़ाई जीती जा सकती है. अभी कोरोना गया नहीं है. हमें भूल नहीं करनी चाहिए.''

इमरान के खिलाफ किसी साजिश से फिर इनकार

वाशिंगटन/इस्लामाबाद, 15 अप्रैल (वार्ता). अमेरिकी सरकार ने शुक्रवार को पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की सरकार गिराने के आरोपों को एक बार फिर खारिज करते हुए कहा कि वह इस मुद्दे पर पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता के बयान से सहमत है.

'जियो न्यूज' के अनुसार एक दिन पहले इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशन्स (आईएसपीआर) के महानिदेशक मेजर जनरल बाबर इफ्तेखार ने कहा कि पिछले महीने राष्ट्रीय सुरक्षा समिति (एनएससी) की बैठक के बाद जारी बयान में ''साजिश'' शब्द इस्तेमाल नहीं हुआ था. सेना के प्रवक्ता ने कहा कि वह यह नहीं बता सकते कि बैठक में क्या चर्चा हुई थी, लेकिन ''साजिश'' शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ था.

उल्लेखनीय है कि पिछले महीने तत्कालीन प्रधानमंत्री इमरान खान ने दावा किया था कि अमेरिकी सरकार उन्हें सत्ता से हटाने के लिए विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन कर रही है. पिछले हफ्ते शनिवार को अविश्वास प्रस्ताव के मतदान में हारने वाले श्री खान ने 27 मार्च की जनसभा में भी एक 'धमकी पत्र' लहराते हुए कहा था कि अमेरिकी सरकार ने उनकी सरकार को धमकी दी है और विपक्ष सत्ता पलट की विदेशी साजिश में शामिल है.अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा, ''इस मुद्दे पर हमारा संदेश साफ और एकरूप है कि इन आरोपों में कोई सत्य नहीं है. हम मानवाधिकार के सम्मान सहित संवैधानिक और लोकतांत्रिक मूल्यों को शांतिपूर्ण तरीके से बनाए रखने का समर्थन करते हैं.''

यूक्रेनी व रूसी शरणार्थी ने आपस में की शादी

मेक्सिको सिटी 15 अप्रैल (वार्ता). यूक्रेन में रूस की तरफ से तबाही का आलम जारी है. यूक्रेन में रूसी सैन्य अभियान का मुद्दा इस वक्त पूरी दुनिया में छाया हुआ है. लेकिन प्रेम किसी सीमा या बाधा का मोहताज नहीं है. कुछ ऐसा ही नजारा देखने को मिला मेक्सिको की सीमा पर बसे शहर तिजुआना में, जहां अमेरिका में शरण की मांग करने वाले एक यूक्रेनी और एक रूसी नागरिक ने आपस में शादी कर ली. मीडिया रिपोर्ट में शुक्रवार को इसकी जानकारी दी गई. बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, यूक्रेन की डारिया सखनियुक ने अपने रूसी बॉयफ्रेंड सीमेन बोब्रोव्स्की संग बुधवार को मैक्सिकन सिविल रजिस्ट्री कार्यालय में शादी की. तिजुआना नगर परिषद की तरफ से जारी एक विज्ञप्ति का हवाला देते हुए बीबीसी ने बताया कि ये दो सप्ताह पहले ही मेक्सिको पहुंचे थे. चूंकि सखनियुक यूक्रेन की नागरिक हैं इसलिए उनके लिए अभी अमेरिका में जाकर बसना आसान है क्योंकि अमेरिका ने युद्धग्रस्त यूक्रेन से पलायन कर रहे यूक्रेनी शरणार्थियों के लिए अपने दरवाजे खोल रखे हैं, लेकिन एक रूसी नागरिक होने की वजह से बोबरोव्स्की के लिए यह फिलहाल उतना आसान नहीं है.

प्रसपा की सभी कार्यकारिणी भंग

लखनऊ, 15 अप्रैल (वार्ता). उत्तर प्रदेश में प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) (प्रसपा) के अध्यक्ष शिवपाल सिंह यादव ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ नजदीकी बढ़ाने की अटकलों के बीच बड़े राजनीतिक उलटफेर के संकेत देते हुए शुक्रवार को अपनी पार्टी की राष्ट्रीय और प्रदेश कार्यकारिणी को भंग कर दिया.

पार्टी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार शिवपाल के पुत्र और प्रसपा के महासचिव आदित्य यादव की ओर से जारी पत्र में प्रसपा की कार्यकारिणी भंग करने की घोषणा की गयी है. गौरतलब है कि शिवपाल ने गुरुवार को अंबेडकर जयंती के अवसर पर बाबा साहेब

शिवपाल ने दिए बड़े राजनीतिक उलटफेर के संकेत

डा भीमराव अंबेडकर के दृष्टांत का हवाला देते हुए देश में समान नागरिक संहिता को लागू करने की पैरवी करके सियासी हलकों में हलचल तेज कर दी थी.

उन्होंने यहां स्थित प्रसपा कार्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि डा अंबेडकर ने भी समान नागरिक संहिता लागू करने की बात कही थी. उन्होंने कहा कि इसे लागू करने का अब उचित समय आ गया है.

ज्ञात हो कि समाजवादी पार्टी (सपा) सैद्धांतिक रूप से समान नागरिक संहिता की पक्षधर नहीं है. शिवपाल ने हाल ही में विधानसभा चुनाव सपा के साथ गठबंधन करके लड़ा था लेकिन चुनाव में सपा गठबंधन की हार के बाद विधायक दल की बैठक उन्हें नहीं बुलाये जाने के कारण वह सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से नाराज हो गये थे. इसके बाद से ही शिवपाल के भाजपा में शामिल होने की चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया. इस बीच पार्टी कार्यकारिण भंग करने की घोषणा से एक बार फिर सपा खेमे में टूट की आशंकायें उपजने लगी हैं.

आज का इतिहास

1889- अपने बेहतरीन अभिनय से दुनिया को हंसाने वाले चार्ली चैपलिन का जन्म.

1919- अमृतसर में हुए जालियांवाला बाग हत्याकांड में मरने वालों श्रद्धांजलि देने के लिए महात्मा गांधी ने प्रार्थना सभा और उपवास की घोषणा की.

1945- एक सोवियत पनडुब्बी के कारण जर्मन शरणार्थी पोत डूब गया, जिससे 7000 लोग मारे गए.

1976- आठ वर्ष तक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री और 13 वर्षों तक लेबर पार्टी के नेता रहे हैरल्ड विल्सन ने त्यागपत्र दिया. उनके इस फैसले ने राजनीतिक हल्कों में तूफान ला दिया.

1988- उत्तरी इराक के कुर्द आबादी वाले शहर हलबजा पर हुए गैस हमले में हजारों की मौत हो गई थी जबकि बहुत से लोग इसके प्रभाव से बीमार हो गए.

थाने हों साफ-सुथरे, शिकायतों का हो त्वरित निस्तारण : योगी

लखनऊ 15 अप्रैल (वार्ता). उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पुलिस थानो में आम लोगों के लिये स्वच्छ वातावरण होना चाहिये ताकि वे बगैर डर के अपनी शिकायतों को दर्ज करा सकें वहीं अभियान चला कर अपराधी तत्वों पर नकेल कसी जाये.

श्री योगी ने शुक्रवार को प्रदेश की कानून - व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण, सुशासन एवं शांति - व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के संबंध में यह निर्देश दिये. उन्होने कहा कि प्रत्येक पुलिस थाने में आम जनता के लिए स्वच्छ वातावरण स्थापित हो. जनसामान्य के बैठने एवं स्वच्छ पेयजल व प्रसाधन आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और अपराधियों के प्रति कठोर अभियान चलाकर सुरक्षा- सुशासन व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाये. उन्होने कहा कि पुलिस थाने में आम जनता के लिए स्वच्छ वातावरण स्थापित करते हुए जनसामान्य के बैठने एवं स्वच्छ पेयजल व प्रसाधन आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, जिससे आम जनता बिना किसी भय के अपनी

अभियान चला कर अपराधी तत्वों पर नकेल कसी जाए

शिकायतों के निस्तारण के लिये थाने पर आ सके. थाने को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के लिए स्वच्छता अभियान के साथ साथ वृक्षारोपण आदि के कार्य कराए जाय. साथ ही प्रदेश में महिला सशक्तिकरण एवं अपराधियों के प्रति कठोर अभियान चलाकर सुरक्षा- सुशासन व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाय.

अपर मुख्य सचिव, गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि गोरखपुर के थाना राजघाट में तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक रणधीर कुमार मिश्रा द्वारा व्यक्तिगत रुचि लेकर पूरे थाना स्टाफ के साथ मिलकर टीम भावना से कार्य करते हुए स्थानीय जनता के सहयोग से थाना राजघाट परिसर के जीर्णोद्धार के लिए कार्य किया गया जिसके परिणामस्वरूप थाना -परिसर का कायाकल्प हो गया. उन्होने कहा कि श्री मिश्रा ने आगंतुक -कक्ष, थाना -कार्यालय, महिला हेल्प- डेस्क आदि सभी स्थानों को काफी अच्छे तरीके से व्यवस्थित एवं् नर्निमित कराया गया. साथ ही परिसर की साफ-सफाई काफी अच्छे तरीके से कराते हुए फूल पौधों से सुसज्जित किया गया ,जिससे थाने में आने वाले प्रत्येक आगंतुक को स्वच्छता के साथ-साथ एक सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है. इसी कड़ी में महिला सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करते हुए महिला हेल्प -डेस्क एवं महिला विश्रामालय का भी निर्माण कराया गया, जिससे थाने पर आने वाली महिला आगंतुकों को किसी तरह की कोई असुविधा ना हो सके.

पाकिस्तान में 83 प्रतिशत तक बढ़ सकते हैं पेट्रोल के दाम

इस्लामाबाद, 15 अप्रैल (वार्ता). पाकिस्तान में इमरान खान की पीटीआई सरकार गिरने के कुछ ही दिन बाद तेल एवं गैस नियामक प्राधिकरण (ओगरा) ने पेट्रोलियम उत्पादों में 120 पाकिस्तानी रुपये तक की रिकॉर्ड बढ़ोतरी का सुझाव दिया है, जो शनिवार से प्रभावी होगा.

आज से होगा प्रभावी

ओगरा ने गुरुवार को 83 प्रतिशत से भी ज्यादा की बढ़ोतरी का सुझाव पूर्ण आयात लागत, विनिमय दर हानि और अधिकतम कर वसूलने के लिए दिया. उल्लेखनीय है कि महंगाई भी श्री खान की सरकार गिरने के कारणों में से एक थी. ओगरा और पेट्रोलियम डिवीजन में उच्च पदस्थ सूत्रों ने द डॉन को बताया कि सरकार को 15 अप्रैल को होने वाली अगले पखवाड़े की समीक्षा के लिए मूल्य वृद्धि के दो विकल्प दिये गये थे, और दोनों ही विकल्पों में अभूतपूर्व मूल्य वृद्धि होनी थी. प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को यह फैसला करना है कि इमरान सरकार द्वारा 28 फरवरी को कीमतों पर लगाई गयी चार-माह (30 जून तक) की रोक समाप्त होगी या नहीं.

यूपी में शुरू हुआ घर-घर दस्तक अभियान

लखनऊ, 15 अप्रैल (वार्ता). संचारी रोगों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए उत्तर प्रदेश में शुक्रवार से दस्तक अभियान की शुरूआत हो गई. अभियान 30 अप्रैल तक जारी रहेगा. अभियान के तहत आशा वर्कर्स घर-घर जाकर संचारी रोग से ग्रस्त मरीजों की पहचान कर रही हैं. इसके साथ ही वह लोगों को संचारी रोग के बारे और उससे बचाव के तरीके के बारे में जागरूक भी किया जा रहा है. जरूरत पड़ने पर जांच की व्यवस्था कराई जा सकेगी. आशा वर्कर्स लोगों को दवा उपलब्ध कराएंगी और अगर आवश्यकता हुई तो उन्हें अस्पताल में भर्ती भी कराया जाएगा. वे लोगों को साफ पानी पीने और आसपास साफ-सफाई के लिए जागरूक कर रही हैं.

आरएसएस राजनीतिक पार्टी बनकर आगे आए-गहलोत

उदयपुर 15 अप्रैल (वार्ता). राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर पर्दे के पीछे से राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि आरएसएस पीछे रहकर भाजपा को जीताने का काम करता है, बल्कि उसे राजनीतिक पार्टी बनकर कांग्रेस की विचारधारा से मुकाबला करना चाहिए.

भागवत के अखंड भारत के बयान पर जवाब

श्री गहलोत ने कांग्रेस की आजादी गौरव यात्रा में शामिल होने के लिए डूंगरपुर जाते समय उदयपुर में मीडिया से आज यह बात कही. आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के अगले पन्द्रह

साल में बनेगा अखंड भारत के बयान के सवाल पर कहा कि जब हर जाति, धर्म का व्यक्ति प्रेम, सद्भावना और भाईचारे के साथ रहेगा, तब बनेगा अखंड भारत. उन्होंने कहा कि आज अखंड भारत की बात कर रहे हैं. जनसंघ, आरएसएस और भाजपा तीनों का महात्मा गांधी, सरदार पटेल एवं डा भीमराव अम्बेडकर से कभी कोई मतलब नहीं रहा और केवल चुनाव जीतने के लिए कर रहे हैं और इन तीनों को ये लोग चुरा रहे हैं. उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगाया था, तब इन्होंने लिखकर दिया था कि हम राजनीति नहीं करेंगे और केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम करेंगे.

अब आरएसएस पीछे रहकर भाजपा को जिताने का काम करता है. ऐसे में या तो आरएसएस एवं भाजपा एक पार्टी बन जाये या दबंग होकर राजनीतिक पार्टी बनकर आगे आना चाहिए.उन्होंने कहा कि कांग्रेस गांधी, पटेल और अंबेडकर जैसों की विचारधारा वाली दमखम पार्टी हैं, हालांकि वह अभी देश में सत्ता में नहीं है, कोई बात नहीं, लेकिन इन लोगों को इस दमखम विचारधारा से मुकाबला करना चाहिए.

इधर उधर

वलनेवा कोविड वैक्सीन को ब्रिटेन में उपयोग की मिली मंजूरी

लंदन. ब्रिटेन ने फ्रांसीसी फार्मा कंपनी वलनेवा द्वारा विकसित कोरोना वैक्सीन के देश में इस्तेमाल के लिए नियामकीय मंजूरी दे दी है. ब्रिटेन की ब्रिटिश मेडिसिन्स एंड हेल्थकेयर प्रोडक्ट्स रेगुलेटरी एजेंसी (एमएचआरए) ने वलनेवा के इस्तेमाल की मंजूरी दी है. वलनेवा ब्रिटेन में विनियामक अनुमोदन प्राप्त करने वाला पहला पूर्ण-वायरस निष्क्रिय वैक्सीन है .इस टीके का 18 से 50 वर्ष की आयु के लोगों में उपयोग के लिए अनुमोदन किया गया है, पहली और दूसरी डोज कम से कम 28 दिन के अंतराल पर ली जानी चाहिए. एमएचआरए ने एक बयान में कहा कि वह वलनेवा उत्पाद को मंजूरी देने वाली दुनिया में पहली एजेंसी है. यह एमएचआरए से मंजूरी हासिल करने वाली छठी कोरोना वायरस वैक्सीन भी है.

अमेरिका से ताइवान के साथ संबंध खत्म करने का किया आग्रह

बीजिंग. चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियन ने शुक्रवार को अमेरिका से ताइवान के साथ सभी आधिकारिक संबंध खत्म करने का आग्रह किया है, जिसे वह अपना अविभाज्य हिस्सा मानता है. गौरतलब है कि चीन की तरफ से यह बयान उस समय सामने आया है, जब अमेरिकी सीनेट की विदेश संबंधी समिति के अध्यक्ष बॉब मेनेंडेज की अध्यक्षता में छह अमेरिकी सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल गुरुवार को ताइवान के राष्ट्रपति त्साई इंग-वेन और रक्षा मंत्री चिउ कुओ-चेंग से मुलाकात की थी. चीन ने कहा कि वह अमेरिका और ताइवान के बीच किसी भी आधिकारिक संबंध का कड़ा विरोध करता है. श्री झाओ ने संवाददताओं से कहा, ''अमेरिका को ताइवान के साथ सभी आधिकारिक आदान-प्रदान को बंद करना चाहिए.

दक्षिण अफ्रीका में बाढ़ ने मचाई तबाही

जोहान्सबर्ग. दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर और पूर्वी क्वाजुलु-नताल प्रांत में भारी बारिश और बाढ़ की चपेट में आकर मरने वालों की संख्या बढ़कर 341 तक पहुंच गई है. स्थानीय मीडिया ने अपनी रिपोर्ट में इसकी जानकारी दी है. ईएनसीए ब्रॉडकास्टर ने कहा है, बुधवार को यहां बाढ़ की गंभीर स्थिति को देखते हुए अधिकारियों ने इसे आपदा क्षेत्र घोषित किया, जहां सैकड़ों मौतें हो चुकी हैं. मीडिया ने पहले 306 मौतें होने की सूचना दी थी, जो अब बढ़कर 341 तक पहुंच गया है. दक्षिण अफ्रीका में क्वाजुलु-नताल प्रांत के प्रमुख सिहले जिकलाला ने इस प्राकृतिक आपदा में 40,000 लोगों से अधिक के प्रभावित होने की घोषणा की.

रूस नहीं लगाएगा अन्य देशों पर प्रतिबंध : दिमित्री बिरिचेव्स्की

मॉस्को. यूक्रेन में रूस के विशेष सैन्य अभियान के मद्देनजर दूसरे देशों की तरफ से रूस पर लगाए जा रहे प्रतिबंधों के जवाब में वह ऐसा नहीं करेगा. रूसी विदेश मंत्रालय के आर्थिक सहयोग विभाग के निदेशक दिमित्री बिरिचेव्स्की ने इसकी जानकारी दी. रूस समर्थित प्रसारक आरटी के प्रसारण में श्री बिरिचेव्स्की ने कहा,''हमारी ओर से जवाबी कार्रवाई की जाएगी. कुछ क्षेत्रों में हमने ऐसा किया भी है, लेकिन हम किसी देश पर प्रतिबंध लगाने की दौड़ में शामिल होने का इरादा नहीं रखते हैं.''

अयोध्या का अर्थ है, जहां युद्ध न हो, जो अजेय हो

अयोध्या में राम मंदिर का पुनर्निर्माण भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक

अयोध्या, 15 अप्रैल, (वार्ता). उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश की प्राचीन धार्मिक नगरी अयोध्या में रामलला के दर्शन करने के बाद कहा कि अयोध्या यात्रा और रामजन्मभूमि के दिव्य दर्शन मिलने से उनकी बीते कई सालों की कामना पूर्ण हुयी है.

मेरी वर्षों की प्रतीक्षा पूर्ण हुई-नायडू

नायडू ने अयोध्या यात्रा के अपने अनुभव को एक लेख के जरिये सोशल मीडिया पर साझा किया. इसमें उन्होंने कहा, अयोध्या में श्री राम मंदिर का पुनर्निर्माण

भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक है, यह प्रतीक है राम के आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का, एक लोकहितकारी न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था का जो सभी के लिए शांति, न्याय और समानता सुनिश्चित करती है. उपराष्ट्रपति ने रामनगरी में आने पर अपनी भावनाओं का इजहार करते हुए कहा, मेरी अयोध्या यात्रा और श्री रामजन्मभूमि के दिव्य दर्शन, आज मेरी वर्षों की प्रतीक्षा पूर्ण हुई. मुझे विश्वास है कि मेरी तरह देश के लाखों श्रद्धालु नागरिक भी भगवान श्री राम के भव्य मंदिर में दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं. इस तीर्थयात्रा ने, मुझे अपने संस्कारों, अपनी महान संस्कृति से जुड़ने का अवसर प्रदान किया.

रामायण के महत्व का भी उपराष्ट्रपति ने जिक्र करते हुए कहा कि रामायण का संदेश भागौलिक सीमाओं से परे, सार्वभौम और कालातीत है, उसकी प्रासंगिकता महज भारतीय उपमहाद्वीप तक ही सीमित नहीं है. इस कालजयी रचना के अनगिनत संस्करण दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों जैसे थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, म्यांमार, लाओस में आज भी प्रचलित हैं.

भारतीयता के प्रतीक-पुरुष हैं राम

नायडू ने अपने लेख में रामचरित मानस की चौपाईयों का भी जिक्र करते हुए भारतीय आस्था के प्रतीक भगवान राम के बारे में लिखा, राम भारतीय संस्कृति के प्रेरणा पुरुष हैं, वे भारतीयता के प्रतीक-पुरुष हैं. एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र- वे आदर्श पुरुष हैं. हम भारतीय जिन सात्विक मानवीय गुणों को सदियों से पूजते आए हैं, वे सभी राम के व्यक्तित्व में निहित हैं. इसीलिए महाविष्णु के अवतार श्री राम, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं.

नयी फिल्म 'द दिल्ली फाइल्स' पर काम शुरू : विवेक अग्निहोत्री

मुंबई, 15 अप्रैल (वार्ता). बॉलीवुड फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' के निदेशक विवेक अग्निहोत्री ने शुक्रवार को संकेत दिया कि उन्होंने नई फिल्म पर काम करना शुरू कर दिया है और उनकी आगामी फिल्म दिल्ली पर आधारित 'द दिल्ली फाइल्स' हो सकती है. विवेक ने कई ट्वीट कर कहा, मैं 'द कश्मीर फाइल्स' में सहयोग करने के लिए सभी लोगों को धन्यवाद देता हूं. पिछले चार साल से हम सभी ने इस फिल्म पर ईमानदारी से कड़ी मेहनत की थी और कश्मीरी पंडितों के साथ हुए अन्याय और उनके नरसंहार के बारे में लोगों को बताना बहुत महत्वपूर्ण था. उन्होंने कहा, अब मैंने एक नई फिल्म पर काम करना शुरू कर दिया है, जो 'द दिल्ली फाइल्स' है.

कहानी

हाथी ने बढ़ाया शेर का खोया आत्मविश्वास

एक बार एक जंगल में एक शेर अकेला बैठा हुआ था. वह अपने बारे में सोच रहा था कि मेरे पास तो तेज धारदार मजबूत पंजे और दांत हैं. साथ ही मैं एक बहुत ही ताकतवर जानवर भी हूं, लेकिन फिर भी जंगल के सारे जानवर हमेशा मोर की ही तारीफ क्यों करते रहते हैं.

दरअसल, शेर को इस बात से बहुत जलन महसूस होती थी कि सभी जानवर मोर की तारीफ करते थे. जंगल के सभी जानवर कहते थे कि मोर जब भी अपने पंख फैलाकर नाचता है, तो वह बहुत सुंदर लगता है. यही सब सोचकर शेर बहुत दुखी हो रहा था.

वह सोच रहा था कि इतना ताकतवर होने और जंगल का राजा होने पर भी कोई उसकी तारीफ नहीं करता है. ऐसे में उसके इस जीवन का क्या मतलब है. तभी वहां से एक हाथी जा रहा था. वह भी काफी दुखी था. जब शेर ने उस दुखी हाथी को देखा, तो उससे पूछा -तुम्हारा शरीर इतना बड़ा है और तुम ताकतवर भी हो. फिर भी इतने दुखी क्यों हो? तुम्हें क्या परेशानी है?

दुखी हाथी को देखकर शेर ने सोचा कि क्यों न मैं इस हाथी के साथ अपना दुख बांट लूं. उसने आगे कहते हुए हाथी से पूछा -कि क्या इस जंगल में ऐसा कोई जानवर है, जिससे तुम्हें जलन होती हो और वह तुम्हें हानि पहुंचाता हो? शेर की बात सुनकर हाथी ने कहा -जंगल का सबसे छोटा जानवर भी मुझ जैसे बड़े जानवर को परेशान कर सकता है.

शेर ने पूछा -वह कौन सा छोटा जानवर है?

हाथी ने कहा -महाराज, वो जानवर चींटी है. वह इस जंगल में सबसे छोटी है, लेकिन जब भी वो मेरे कान में घुसती है, तो मैं दर्द के मारे पागल हो जाता हूं.

हाथी की बात सुनकर शेर को समझ में आ गया कि मोर तो मुझे चींटी की तरह परेशान भी नहीं करता है, फिर भी मुझे उससे जलन होती है.

ईश्वर ने सभी प्राणियों को अलग-अलग खामियां और खूबियां दी हैं. इसी वजह से सारे प्राणी एक जैसे ही ताकतवर या कमजोर नहीं हो सकते हैं.

इस तरह शेर को यह समझ में आ गया कि उस जैसे ताकतवर जानवर में भी खूबियों के साथ कमियां हो सकती है. इससे शेर के मन में उसका खोया हुआ आत्मविश्वास फिर से बढ़ गया और उसने मोर से जलन करना बंद कर दिया.

कहानी से सीख

हमें कभी भी किसी की खूबी देखकर उससे नहीं जलना चाहिए, क्योंकि हम सभी में अलग-अलग खूबियां और खामिंया होती है

अनोखा घर

सबका अपना होता है,
सबको रहना होता है,
और जहाँ सुख-दु:ख होता है,
वह अनोखा घर होता है.
चार-दीवार के अंदर रहते सब,
समय पता नही बीत जाता है कब,
वह अनोखा घर होता है.
जहाँ सब अपना
काम करते है,
मिल-
जुलकर
साथ
हमेशा रहते है,
वह अनोखा घर होता है.
आज मनुष्य की हरकतों से घर बिखरता जा रहा है,
एकता का वातावरण पिघलता जा रहा है,
कहीं ऐसा ना हो कि कोई कहे पहले ऐसा होता था,
हर अच्छा घर, अनोखा घर होता था.

पहेलियां

- बिन खाए, बिन पिए, सबके घर में रहता हूं ना खाता हूं, ना रोता हूं, घर की रखवाली करता हूं.

ताला.

- सिर पर कलगी, पर मुर्गा नहीं हूं. करता हूं नाच, पर कलाकार नहीं हूं, तो बताओ आखिर क्या हूं?

पीकॉक

- पैर नहीं है, पर चलती रहती हूं. दोनों हाथों से अपना मुंह पूछती रहती हूं.

घड़ी

- बिना पैर के करती यात्रा, मेरे बिना तुम मर जाओगे, दो अक्षर का मेरा नाम, क्या तुम मेरे बिना रह पाओगे.

हवा

- कान है पर बहरी हूं, मुंह है पर मौन हूं, आंखें हैं पर अंधी हूं, तब आखिर बताओ मैं कौन हूं?

गुड़िया

- काली है पर काग नहीं, लंबी है पर नाग नहीं, बल खाती हूं पर डोर नहीं, बांधते हैं पर डोर नहीं?

चोटी

- काले वन की रानी हूं, लाल पानी पीती हूं?

खटमल

- अपनों के ही घर यह जाए, तीन अक्षर का नाम बताएं, शुरू के 2 अति हो जाए, अंतिम 2 से तिथि बताएं?

अतिथि

चुटकुले

- कंजूस बाप बेटे से: मेरी ख्वाहिश है कि तू बड़ा होकर वकील बने.
बेटा: क्यों
कंजूस बाप: ताकि मेरा काला कोट तुम्हारे काम आ जाए.

--oo--

- टीचर चिंटू से होमवर्क क्यों नहीं किया.
चिंटू: मैम, मैं जब पढ़ने बैठा तो लाइट चली गई.
टीचर: तो लाइट आने के बाद क्यों नहीं की पढ़ाई.
चिंटू: बाद में मैंनें इस डर से पढ़ने नही बैठा कि कहीं मेरी वजह से फि से लाइट न चली जाए.

--oo--

- मिंटू: चिंटू भाई आज अपनी साइकिल आज मुझे दे दो.
चिंटू: नहीं दे सकता.
मिंटू: तुम मुझे साइकिल नहीं दोगे तो मेरा दिल खट्टा हो जाएगा
चिंटू: तो चीनी डाल के खा लेना

--oo--

- टीचर: विदेश में 15 साल के बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं.
चिंटू: मास्टर जी हमारे देश में तो एक साल का बच्चा भागने भी लगता है.

--oo--

- एक बच्चे ने चिंटू से पूछा क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो.
चिंटू: हां! अगर वो हिंदी या अंग्रेजी में लिखी हो तो.

कबूतर और मधुमक्खी

एक समय की बात है. एक जंगल में नदी किनारे एक पेड़ पर कबूतर रहता था. उसी जंगल में एक दिन कहीं से एक मधुमक्खी भी गुजर रही थी कि अचानक से वह एक नदी में जा गिरी. उसके पंख गीले हो गए. उसने बाहर निकने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन वह नहीं निकल सकी. जब उसे लगा कि वह अब मर जाएगी, तो उसने मदद के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया. तभी पास के पेड़ पर बैठे कबूतर की नजर उस पर पड़ गई. कबूतर ने उसकी मदद करने के लिए तुरंत पेड़ से उड़ान भर ली.

कबूतर ने मधुमक्खी को बचाने के लिए एक तरकीब सोची. कबूतर ने एक पत्ते को अपनी चोंच में पकड़ा और उसे नदी में गिरा दिया. वह पत्ता मिलते ही मधुमक्खी उस पर बैठ गई. थोड़ी ही देर में उसके पंख सूख चुके थे. अब वह उड़ने के लिए तैयार थी. उसने कबूतर को जान बचाने के लिए धन्यवाद बोला. उसके बाद मधुमक्खी वहां से उड़कर चली गई. इस बात को कई दिन बीत चुके थे. एक दिन वही कबूतर गहरी नींद में सो रहा था और तभी एक लड़का उस पर गुलेल से निशाना लगा रहा था. कबूतर गहरी नींद में था. इसलिए वह इस बात से अंजान था, लेकिन उसी समय वहां से एक मधुमक्खी गुजर रही थी, जिसकी नजर उस लड़के पर पड़ गई. यह वही मधुमक्खी थी, जिसकी कबूतर ने जान बचाई थी.

मधुमक्खी तुरंत लड़के की ओर उड़ गई और उसने जाकर सीधे लड़के के हाथ पर डंक मार दिया. मधुमक्खी के काटते ही लड़का तेजी से चिल्ला पड़ा. उसके हाथ से गुलेल दूर जाकर गिरी. लड़के के चिल्लाने की आवाज सुनकर कबूतर की नींद खुल गई थी. वह मधुमक्खी के कारण सुरक्षित बच गया था. कबूतर सारा माजरा समझ गया था. उसने मधुमक्खी को जान बचाने के लिए धन्यवाद बोला और दोनों जंगल की ओर उड़ गए.

कहानी से सीख

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें मुसीबत में फंसे व्यक्ति की मदद जरूर करनी चाहिए. इससे हमें भविष्य में इसके अच्छे परिणाम जरूर मिलते हैं.

कस्तूरी मृग के सींग नहीं होते

हिमवंत क्षेत्र के इस मृग का नाम कस्तूरी मृग इसलिए पड़ा कि इसकी नाभी से कस्तूरी निकलती है. कस्तूरी अपनी सुगंध के लिए प्रसिद्ध है तथा दवाइयों में प्रयुक्त होती है. कस्तूरी प्राप्त करने के लिए सदियों से इसका अनियंत्रित वध हुआ है.

अन्य मृगों की भांति कस्तूरी मृग के सींग नहीं होते हैं, लेकिन प्रकृति ने उन्हें अपने बचाव के लिए सींग की जगह दो लम्बे दाँत दिए हैं. नर के ऊपरी जबड़े से दो दाँत बाहर निकले होते हैं. उसकी ऊँचाई आधा मीटर से अधिक होती है, और वह मृग की भाँति नहीं दिखता है. लम्बे समय तक वैज्ञानिक उसे मृग-वंश का नहीं मानते थे. कस्तूरी मृग का रंग भूरा और पेट तथा निचला भाग सफ़ेद होता है.

कस्तूरी मृग हिमालय में पच्चीस सौ से छत्तीस सौ मीटर की ऊँचाई पर पाया जाता है, दिन के समय वह झाड़ियों तथा चट्टानों की आड़ में विश्राम करता है, लेकिन अँधेरा होते ही भोजन की खोज में निकल पड़ता है. शीतकाल में भी वह अपना निवास-स्थान नहीं बदलता है. कस्तूरी मृग एकान्त-प्रिय पशु है. केवल भोजन के लिए विश्राम-स्थल से बाहर निकलता है.

एक समय कस्तूरी मृग हिमालय में बड़ी संख्या में पाया जाता था, लेकिन उन्नीसवीं सदी में कस्तूरी की इतनी माँग बढ़ी कि बड़ी संख्या में उसका वध हुआ. शंकित होने पर वह बड़ी-बड़ी छलांगे मारकर भागता है, लेकिन बार-बार पीछे मुड़कर देखता है. इस बुरे स्वाभाव के कारण वह सरलता से शिकारी का निशाना बन जाता है. कभी-कभी उसकी छलाँगे पन्द्रह मीटर से लेकर अठ्ठारह मीटर तक ऊँची होती हैं.

अल्प आयु भोगी मृग मादा जिसकी अवस्था केवल तीन वर्ष की होती है, एक वर्ष की उम्र से ही बच्चे देने लगती है. प्रतिवर्ष इसके एक या दो बच्चे होते हैं. यदि मृगी के दो बच्चे हों, तो वह उन्हें एक ही स्थान पर नहीं वरन अलग-अलग स्थानों पर रखती है. बच्चों के शरीर पर हिरन के बच्चों की तरह धब्बे होते हैं. ये प्राय- पहाड़ी दरारों या झाड़ियों के नीचे खड्डों में रहते हैं.

रंग भरो

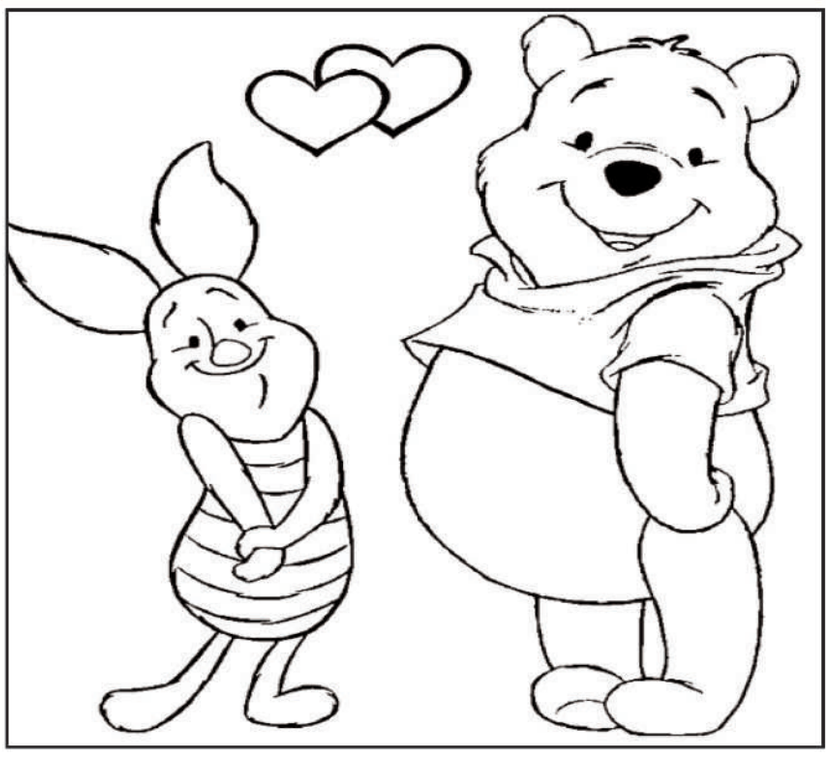

बिंदु मिलाओ

अंतर निकालो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में वैसे तो एक से हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर :- 1. लड़के की कैप 2. आग 3. टेंट पर खिड़की 4. पूल का एक स्पोर्ट कम 5. पहाड़ के पास के पेड़ों का अंतर

ए एन मेमोरियल चिल्ड्रन स्कूल अराजीबाग विद्यालय के संस्थापक प्रधानाचार्य नीलिमा श्रीवास्तव की प्रथम पुण्यतिथि

प्रखर आजमगढ़। ए एन मेमोरियल चिल्ड्रन स्कूल अराजीबाग विद्यालय के संस्थापक प्रधानाचार्य नीलिमा श्रीवास्तव की प्रथम पुण्यतिथि विद्यालय प्रांगण में मनाई गई ।कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मालती मिश्रा ने किया ।इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में युवा समाजसेवी अविनाश चौहान ,नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रणीत श्रीवास्तव हनी ,अभिषेक जयसवाल दीनू ,पुनीत राय, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष माला द्विवेदी ,गायत्री परिवार की उषा शर्मा ,श्रीमती कंचन मिश्रा पत्नी विधानसभा आजमगढ़ प्रत्याशी अखिलेश मिश्रा,उपस्थित थे ।सर्वप्रथम अतिथियों ने सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए दीप प्रज्ज्वलन किया तत्पश्चात लोगों ने नीलिमा श्रीवास्तव को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। सभा को संबोधित करते हुए डॉ.पूनम तिवारी ने बताया कि नीलिमा एक व्यक्ति नहीं एक अनोखा व्यक्तित्व था जो नारी शक्ति संस्थान ,भविष्य दीप कला केंद्र ,भारत विकास परिषद ,संस्कार भारती ,बनवासी छात्रावास ,अंतर्राष्ट्रीय भोजपुरी संगम ,गायत्री परिवार, राष्ट्रीय साहित्य कला संस्थान सहित अन्य कई स्वयंसेवी संस्थानों से जुड़ी थी ।प्रत्येक व्यक्ति इनमें अपने छवि को निहार सकता था ।सभा को संबोधित करते हुए उषा शर्मा ने कहा की आप जैसे विशाल ह्रदय की महिला कभी-कभी इस धरा पर अवतरित होती है । हमने या किसी ने भी किसी बच्चे के लिए अगर सिफारिश

की होगी तो आपने उसकी पूरी शिक्षा दीक्षा मुक्त कराई ।यह आपके महान व्यक्तित्व का परिचायक है। पुनीत राय ने कहा कि बड़ी मिस हम पूरे जीवन में नहीं भूल पाएंगे और उनकी केवल एक खूबी को ही अगर हम अपने जीवन में उतार लें तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।अभिषेक जायसवाल ने कहा कि इस युग में महिलाएं दो कदम आगे बढ़ रही हैं तो कहीं ना कहीं इसके पीछे श्रीमती नीलमा श्रीवास्तव का हाथ रहा है । माला द्विवेदी ने अपने संबोधन में बताया कि आप शिक्षा के साथ-साथ संगीत के क्षेत्र में भी अपना एक अलग स्थान रखती थी । हरकेश विक्रम श्रीवास्तव ने कहां गई यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता, निलिमा जी समाज सेवा के क्षेत्र में दो कदम आगे ही रहती थी ।संस्कार भारती के अध्यक्ष डॉ डी.पी. तिवारी ने कहा कि हमें कभी ऐसा लगा ही नहीं कि वह एक ममतामई मां की जैसे हमारे प्रति व्यवहार नहीं किया ।वह सब की लिए एक शीतल छांव के समान थी। सलिल श्रीवास्तव ने अपने मां को याद करते हुए भावविभोर हो गए और कहा वो बेटा बहुत भाग्यशाली होता है जिसकी मां सबकी मां होती हैं। ऐसा प्यार और दुलार समाज के लिए कम लोगों को नसीब होता है ।सभा को संबोधित करते हुए मनीषा मिश्रा ने कहा कि व्यक्ति चला जाता है लेकिन उसकी यादें ,उसके कार्य सदैव इस धरा पर जीवित रखते हैं ।सरोज यादव गीत के माध्यम से उनको श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर शंभू नाथ मिश्रा ने अपने निर्गुण भजनों से लोगों का मन मोह लिया। विद्यालय की एडमिनिस्ट्रेटिव हेड संध्या रानी गौड़ ने लोगों के प्रति आभार ज्ञापन किया ।इस अवसर पर अपनी मां को याद करते हुए सुधांशु श्रीवास्तव ने कहा कि उनके जैसी महिला समाज को एक नई दिशा और दशा दे गई। ऐसे लोग इस धरा पर कभी-कभी अवतरित होते हैं ।उन्होंने सबके लिए एक नया आदर्श प्रस्तुत किया ।सभा की अध्यक्षता करते हुए मालती मिश्रा ने कहा कि निसंदेह नीलिमा जी एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थी जो भी एक बार उनसे बात कर लेता था उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। मां के रूप में, एक पत्नी के रूप में ,एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने सारे जिम्मेदारियों का निर्वहन सफलतापूर्वक किया । इस अवसर पर अजेंद्र राय ने कहा कि एक नहीं दो-दो मात्राएं नर से भारी नारी ।नारी शक्ति के रूप में निलिमा जी का योगदान समाज के लिए अतुलनीय है ,और समस्त लोगों के लिए अनुकरणीय भी है विद्यालय के प्रबंधक सुभाष चंद्र श्रीवास्तव ने लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

लम्बे समय से फरार चल रहे एक महिला सहित दो को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक रामबदन सिंह के निर्देशन में जिला पुलिस अपराध और अपराधियों के खिलाफ लगातार अभियान चला रही है। इस दौरान आएदिन अपराधियों को गिरफ्तार कर रही है। इसी क्रम में शनिवार को बहरियाबाद पुलिस ने लम्बे समय से फरार चल रहे एक महिला सहित दो लोगों को गिरफ्तार किया और उनके पास से चोरी का जेवरात बरामद किया और अभियुक्तों का चालान कर दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बहरियाबाद थाना में तैनात उपनिरीक्षक अजय कुमार यादव क्षेत्र में शांति व्यवस्था के दृष्टिगत हमराहियों के साथ क्षेत्र में भ्रमणशील थे। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि लम्बे समय से फरार चल रहे दो अभियुक्त क्षेत्र के हुरमुजपुर हाल्ट के पास मौजूद है। इस सूचना पर तत्काल पुलिस मौके के लिए रवाना हो गई। पास पहुंचने पर वहां मौजूद महिला और पुरुष की जैसे ही पुलिस पर नजर पड़ी, वह भागने

चाहे, लेकिन पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उपनिरीक्षक ने बताया कि फंदे में आये अभियुक्तों में वार्ड नंबर-5 पटेल नगर विक्रमगंज थाना विक्रमगंज जिला रोहतास बिहारी निवासी विजय खरवार और रीता देवी शामिल है। इसके पास से चोरी का चांदी का दो पायल और चांदी का एक हसुली बरामद किया गया। उन्होंने बताया कि इनके खिलाफ मुकदमा पंजीकृत था और लम्बे समय से तलाश की जा रही थी। अभियुक्तों का संबंधित धाराओं में चालान कर दिया गया है।

अराजक तत्वों ने अम्बेडकर मूर्ति के पास लगा झंडा उखाड़ फेंका

प्रखर केराकत जौनपुर। केराकत कोतवाली क्षेत्र के बेलहरी गाँव मे अम्बेडकर जन्मदिवस के बाद लगें झंडे को उखाड़ने के बाद मड़हा रखने की बात को लेकर विवाद हो गया मामले में एक पक्ष ने

दूसरे पक्ष के खिलाफ तहरीर केराकत कोतवाली में देकर न्याय की गुहार लगाई। केराकत कोतवाली क्षेत्र के बेलहरी गाँव निवासी विशाल कुमार, रमेश, अविनाश, व हार्दिक कुमार ने दूसरे पक्ष पर आरोप लगाया कि अम्बेडकर जन्मदिवस मनाने के बाद झंडा लगाया गया था, विपक्षी ने शुक्रवार की रात झंडा उखाड़कर फेक दिया जिसे हमलोगों ने सुबह फिरसे लगाया जिसे शनिवार दोपहर में उखाड़कर फेक दिया व उसके बाद वहाँ मड़हा रखने लगे जिसके बाद मना करने पर विवाद करने पर अमादा हो गए, जिसकी सूचना पीड़ित पक्ष ने 112 पुलिस व कोतवाली में तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई। इस बाबत केराकत अपराध निरीक्षक दिग्विजय सिंह ने बताया मामला संज्ञान में है, आरोपी को पुलिस कोतवाली लेकर आई है पूछताछ की जा रही है।

यूपी: आंधी ने केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल की सभा में मचाई भगदड़, मंच गिरा बाल-बाल बचे लोग

लखनऊ। संविधान निमार्ता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती के अवसर पर यूपी में आगरा के नगला पद्मा क्षेत्र में आयोजित भीमनगरी समारोह 2022 में बड़ा हादसा हो गया। बता दें कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल बाल-बाल बच गये। दरअसल उनके भाषण के दौरान तेज तूफान आया और बिजली चली गई। तूफान की वजह से कुछ लाइटें गिर गईं, जिससे 6 लोग घायल हो गए।

बताया जा रहा है कि अगर केंद्रीय मंत्री अपना संबोधन नहीं दे रहे होते तो वो भी घायल हो सकते थे। कार्यक्रम के दौरान आई आंधी के चलते लाइटिंग स्टैंड गिर गया था। इसको लेकर एडीएम सिटी अंजनी कुमार सिंह ने जानकारी दी कि हादसे में एक व्यक्ति की जान गई है और चार अन्य घायल हो गए। एडीएम ने बताया, इस हादसे में राजेश कुमार नाम के एक शख्स की मृत्यु हो गई। घटना के वक्त वह मंच पर मौजूद थे। वह पूर्व मंत्री डॉ जीएस धर्मेश के ड्राइवर के भाई थे। आगरा के सदर पुलिस थाने के अधिकारियों ने इस हादसे में कम से कम आधा दर्जन लोगों के घायल होने की पुष्टि की है। वहीं पूर्व विधायक गुटियारी लाल दुबेश और उनके ड्राइवर समेत घायलों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। घायलों में भीम नगरी की आयोजन समिति के महासचिव धर्मेंद्र सोनी भी घायलों में शामिल हैं। गौरतलब है कि ताजनगरी आगरा में अंबेडकर जयंती काफी उत्साह और धूमधाम से मनाई जाती है। इस कार्यक्रम में अर्जुन मेघवाल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए थे। उन्होंने इस कार्यक्रम को लेकर अपने एक ट्वीट में लिखा, बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य पर भाजपा द्वारा आयोजित सामाजिक न्याय पखवाड़ा के क्रम में आगरा के भीमनगरी समारोह 2022 में भाग लेकर मोदी योगी डबल इंजन सरकार द्वारा सामाजिक उत्थान की दिशा में क्रियान्वित योजनाओं के संदर्भ में सम्बोधित किया। बता दें कि हादसे के वक्त केंद्रीय मंत्री मंच पर थे। उनका भाषण चल रहा था। तेज आंधी के चलते कार्यक्रम स्थल पर अफरा-तफरी का माहौल हो गया।

यमुना एक्सप्रेसवे के लिए बनेंगे तीन नए थाने, उत्तर प्रदेश सरकार ने दी मंजूरी

नोएडा। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र और यमुना एक्सप्रेसवे के लिए आठ नए थाने खुलेंगे। इनमें से तीन थाने यमुना एक्सप्रेसवे के लिए होंगे। उत्तर प्रदेश शासन ने इसकी मंजूरी दे दी है। थानों के लिए जमीन और इमारत यमुना प्राधिकरण उपलब्ध कराएगा। नए थाने खुलने से यात्रियों को भी सुविधा मिलेगी। एक्सप्रेसवे से रोजाना तीस हजार से अधिक वाहन निकलते हैं। जेवर एयरपोर्ट का निर्माण शुरू होने के साथ ही यमुना प्राधिकरण में गतिविधियां बढ़ी हैं। यहां फिल्म सिटी के साथ आवासीय सेक्टर की सुरक्षा के लिए नए थाने बनाने का प्रस्ताव यमुना प्राधिकरण बोर्ड ने पास करके शासन को एक साल पहले भेजा था। प्राधिकरण को इस प्रस्ताव की मंजूरी का इंतजार था। प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद अब इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई है। नए थाने खुलने से लोगों में सुरक्षा का भाव बढ़ेगा। प्राधिकरण क्षेत्र में बसावट भी शुरू होगी। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में दो औद्योगिक इकाइयां बहुत जल्द शुरू होने वाली हैं। इसका फायदा औद्योगिक इकाइयों को भी मिलेगा। प्राधिकरण के सेक्टर-18, 20 व 22 डी में एक-एक थाना बनाया जाएगा। इन सेक्टरों में 21 हजार से अधिक आवासीय भूखंड हैं। सेक्टर-21 में विकसित होने वाली फिल्म सिटी भी इसके पास है। इसके अलावा कई और सेक्टर हैं, जिनको थानों का लाभ मिलेगा। इसके अलावा औद्योगिक सेक्टर-25 ए और 29 में भी एक-एक नया थाना बनेगा। सेक्टर-29 में औद्योगिक क्लस्टर हैं। यमुना प्राधिकरण में बनने वाले नए थानों के लिए जमीन निःशुल्क मिलेगी। यह जमीन प्राधिकरण देगा।

चाचा शिवपाल के बगावती तेवरों से जूझ रही सपा में टूट तय योगी से मिले सुखराम

नई दिल्ली। सपा मुखिया अखिलेश यादव की मुश्किलें कम नहीं हो रहीं। चाचा शिवपाल के फिर बगावती तेवरों से जूझ रही सपा को एक और झटका पार्टी के राज्यसभा सांसद चौधरी सुखराम दे सकते हैं। विधानसभा चुनाव से पहले ही उनके बेटे मोहित यादव ने भाजपा का दामन थाम लिया था। अब परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से चौधरी सुखराम की मुलाकात के बाद उनके भी भाजपा में आने की चर्चाएं तेज हो गई हैं। इस मुलाकात के बाद सुखराम ने अखिलेश को घेरते हुए कहा कि उनके पास मुझसे मिलने का वक्त ही नहीं। विधान परिषद के पूर्व सभापति चौधरी सुखराम की मुख्यमंत्री योगी से मुलाकात के राजनैतिक निहितार्थ निकाले जा रहे हैं। दरअसल सुखराम 2016 में राज्यसभा सदस्य बने थे और उनका कार्यकाल भी जल्द खत्म होने जा रहा है। हालांकि उन्होंने मीडिया से बातचीत में यही कहा कि मुख्यमंत्री बनने के बाद वे मिल नहीं सके थे इसलिए योगीजी को बधाई देने गए थे।

गुजरात की भाजपा सरकार ने चुनाव से पूर्व विरोध के चलते चार फैसले लिए वापस

नई दिल्ली। गुजरात में इसी साल दिसंबर में विधानसभा चुनाव होना प्रस्तावित है ऐसे में गुजरात की भाजपा सरकार ने चार बड़े सरकारी फैसले (जिनमें से दो केंद्र ने लिए थे) विरोध के बाद वापस ले लिए गए हैं। इन फैसलों का किसानों, पशुपालकों, आदिवासियों और कपड़ा संघों जैसे समुदायों ने विरोध जताया था। हाल ही में गुजरात विधानसभा द्वारा पारित किया जाने वाला शहरी क्षेत्रों में गुजरात मवेशी नियंत्रण विधेयक, 2022 को भी वापस लेना पड़ा...यह पहली बार है जब राज्य की भाजपा सरकार को ऐसे फैसले लेने पड़े हैं।

गुजरात विधानसभा ने छह घंटे की बहस के बाद 31 मार्च को गुजरात मवेशी नियंत्रण विधेयक पारित किया था। कांग्रेस ने कानून का कड़ा विरोध किया था, जिसका मालधारी समुदाय, पारंपरिक रूप से पशुपालकों द्वारा जोरदार विरोध किया गया था। हालांकि शीर्ष सरकारी अधिकारियों ने बताया कि विधेयक को कई स्तरों पर (मंत्रिस्तरीय स्तर पर, मुख्यमंत्री के स्तर पर और कैबिनेट स्तर पर) चर्चा के बाद ही आगे बढ़ाया गया था।

सार्वजनिक रूप से विधेयक का विरोध करने वालों में भाजपा के गुजरात अध्यक्ष सीआर पाटिल भी थे, जिन्होंने यह विश्वास भी व्यक्त किया कि अगले विधानसभा सत्र में इसे वापस ले लिया जाएगा। सीआर पाटिल ने कहा कि, मुझे लगता है कि प्रस्तावित कानून कुछ नौकरशाहों द्वारा तैयार किया गया होगा जो गांवों की स्थिति को नहीं समझते हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सरकार ने गुजरात शहरी विकास मिशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया था जो राज्य में नगर निगमों के साथ परामर्श करेगी और विधेयक का मसौदा तैयार करने से पहले इस विषय का विस्तार से अध्ययन करेगी। वहीं 29 मार्च को भूपेंद्र पटेल सरकार ने कृषि क्षेत्र के लिए 6 घंटे से रोजाना 8 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के फैसले को उलट दिया था। बदले में सरकार ने उद्योग क्षेत्र के लिए अनिवार्य साप्ताहिक अवकाश लगाया। मार्च के पहले सप्ताह में बिजली आपूर्ति पर किसानों के व्यापक विरोध प्रदर्शन के बाद यह निर्णय लिया गया। राज्य सरकार जहां किसानों को 60 पैसे प्रति यूनिट से कम पर बिजली की आपूर्ति करती है, वहीं उद्योग से लगभग 8 रुपये प्रति यूनिट शुल्क लिया जाता है। जैसे ही विरोध राज्य के अधिकांश हिस्सों में फैल गया, सरकार ने फैसले को बदलते हुए 29 मार्च को किसानों के लिए आठ घंटे बिजली आपूर्ति की घोषणा की।

प्रयागराज में एक ही परिवार के 5 सदस्यों की गला रेतकर हत्या

प्रयागराज। धार्मिक नगरी प्रयागराज में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां एक ही परिवार के पांच लोगों की गला काटकर हत्या कर दी गई। मामला खागलपुर गांव का है। मरने वालों में पति-पत्नी और उनके तीन बच्चे शामिल हैं। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई है और मामले की बारीकी से जांच कर रही है। पुलिस ने बताया कि 42 वर्षीय मृतक राहुल तिवारी अपनी 38 वर्षीय पत्नी प्रीती और तीन बेटियों माही, पीहू और पोहू के साथ खागलपुर में किराए के मकान में रह रहा था। मूल रूप से यह परिवार कौशांबी का रहने वाला था। पुलिस के मुताबिक, पत्नी और तीन बच्चों के शव बेड पर पड़े मिले। उनकी गला काटकर हत्या की गई है। तो वहीं, पति का शव बाथरूम में फंदे से लटका मिला है। पुलिस इस मामले की हर एक एंगल से जांच कर रही है। इस मामले में सीएम योगी आदित्यनाथ ने शोक व्यक्त किया है। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को निष्पक्षता के साथ जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

स्कूलों को बंद करने की जरूरत नहीं, कोरोना मामले बढ़ने पर उठाएं आवश्यक कदम

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में कोरोना के वायरस का प्रकोप एक बार फिर कहर ढ़ाने की कोशिश कर रहा है, करोना केस फिर बढ़ने लगे हैं। इस बार कोरोना के मामले स्कूलों में सामने आ रहे हैं। जिसके चलते सरकार को फिर से पाबंदियां लगाने पर मजबूर होना पड़ रहा है। हालांकि, दिल्ली के इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल में बाल रोग विशेषज्ञ डा. स्मिता मल्होत्रा ने सुझाव दिया है। उन्होंने कहा कि कोरोना के केस मिलने के बाद स्कूलों को बंद करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बल्कि इसके बजाय एहतियाती उपाय करने चाहिए।

दरअसल, बाल रोग विशेषज्ञ डा. स्मिता मल्होत्रा ने कहा कि शिक्षक और छात्रों में कोविड-19 के लक्षण मिले हैं। ऐसे में उनके पाजिटिव मिलने के बाद स्कूलों को बंद करने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि स्कूली शिक्षा बच्चों के विकास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। यहां बच्चों का शैक्षिक विकास, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक पहलुओं का विकास होता है। इसलिए निश्चित रूप से अभी स्कूलों को बंद करने की कोई जरुरत नहीं है। साथ ही उन्होंने कहा कि मानक सावधानियां जो दूसरों के लिए हैं, उसका स्कूलों में भी पालन होना चाहिए। बच्चों के लिए स्कूलों में बार-बार हाथ धोना और अच्छा वेंटिलेशन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसके अलावा उनकी उचित जांच सुनिश्चित की जानी चाहिए। यदि आपको लगता है कि किसी बच्चे में मामूली लक्षण भी हैं, तो उस बच्चे को कुछ दिनों के लिए घर पर रहने के लिए कहा जाए। डाक्टर मल्होत्रा का यह भी मानना है कि बढ़ती उम्र के दौरान बच्चे विभिन्न प्रकार के वायरस के संपर्क में आते हैं और जब भी मौसम बदलता है या उन विशेष वायरस का कोई मौसम होता है, तो वे वायरल संक्रमण की चपेट में आ जाते हैं। उन्होंने कहा कि केवल एक चिंता का विषय यह है कि कोविड इतनी तेजी से नहीं फैलनी चाहिए कि यह स्कूलों पर ही हावी हो जाए। उन्होंने बताया कि स्कूलों के फिर से खुलने के बाद बच्चों के कोविड होने की कुछ खबरें आई हैं, लेकिन उन्हें कोई गंभीर बीमारी नहीं है।

बीमा की रकम हड़पने को बेटी ने पति संग मिलकर किया मां का कत्ल

नोएडा। ग्रेटर नोएडा के दनकौर में रिश्तों को शर्मसार करने वाली घटना सामने आई है। गुरुवार रात एक महिला ने कथित तौर पर अपने पति के साथ मिलकर अपनी मां को मार डाला और फिर शव को घर में ही जला दिया। बुजुर्ग महिला घर में अकेली रहती थी। उसका बेटा दिल्ली में रहता है। बेटे का आरोप है कि चार साल पहले पिता की मौत के बाद मिली 15 लाख रुपये की बीमा राशि को हड़पने के लिए बहन ने मां की हत्या की है। वारदात के बाद से हत्यारोपी पति-पत्नी फरार हैं, पुलिस उनकी तलाश कर रही है। दनकौर के मोहल्ला तुलसी नगर में चपररगढ़ निवासी विरमा वती (65 वर्ष) किराए के मकान में रहती थी। उसका बेटा विपिन परिवार के साथ दिल्ली में रहता है जो कभी-कभी देखरेख के लिए आता था। इन दिनों विपिन के दो बच्चे विरमा के पास आए हुए थे। पुलिस का कहना है कि गुरुवार रात को हतेवा गांव में रहने वाली बेटी वीनू अपने पति महावीर के साथ विरमा के घर पहुंची।

पोखरों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है : सीडीओ

रतनपुरा, मऊ। खंड विकास अधिकारी कार्यालय के आवासीय परिसर में मुख्य विकास अधिकारी राम सिंह वर्मा एवं डीसी मनरेगा उपेंद्र कुमार पाठक ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच नारियल फोड़कर शुक्रवार को पोखरा खुदाई कार्य का शहीद स्मारक के पास शुभारंभ किया। विगत काफी दिनों से विकासखंड के आवासीय परिसर में पोखरा खुदाई की मांग आम जनता द्वारा की जा रही थी। जनता की मांग आज उस समय साकार हुई जब पोखरा खुदाई कार्य का विधिवत शुभारंभ हो गया। पोखरा खुदाई कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए मुख्य विकास अधिकारी राम सिंह वर्मा ने कहा की पोखरो का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है कभी समय था कि हमारे गांव में पोखरा और तालाबों का संरक्षण सभी मिलकर किया करते थे परंतु विगत कुछ समय से लापरवाही के चलते पोखरे एवं तालाबों के अस्तित्व पर संकट आने लगा जिससे जनजीवन भी प्रभावित हुआ। मानव के साथ ही साथ पशु पक्षियों के अस्तित्व पर भी संकट मंडराने लगा। जलस्तर नीचे जाने लगा और पेयजल की समस्या बढ़ने लगी। इसे ध्यान में रखते हुए शासन ने पोखरो एवं तालाबो कि अधिक से अधिक खुदाई कराकर जहां एक तरफ जल

स्तर को बनाए रखने की कवायद की वहीं दूसरी तरफ सभी जीवो के लिए भी भविष्य के सपने सजाए गए। इस अवसर पर डीसी मनरेगा उपेंद्र कुमार पाठक ने कहा कि मनरेगा के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस पोखरा निर्माण से रोजगार सृजन में सुविधा होगी। खंड विकास अधिकारी दिवाकर सिंह ने आवासीय परिसर में पोखरा खुदाई, सेनानी, स्थल का सुंदरीकरण एवं वृक्षारोपण के माध्यम से इस स्थान को सुरम्य रमणीय स्वरूप देने की योजना बताई। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान रतनपुरा जय किशोर गुप्ता, एपीओ मनरेगा असलम, धर्मेंद्र शुक्ला, गिरीश चंद्र श्रीवास्तव, राकेश राय, रोजगार सेवक सुनील गिरी, गोलू गुप्ता समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। प्रथम दिन 34 महिला एवं 12 पुरुष मनरेगा मजदूरों ने कार्य किया। इस पोखरे निर्माण में 199000 का बजट रखा गया है। खंड विकास अधिकारी दिवाकर सिंह ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

चालक व परिचालक रोडवेज का लगा रहे चूना

आजमगढ़। रोडवेज के चालक व परिचालक ही विभाग के राजस्व का चूना लगा रहे है। बसों पर बिना बुक कराए थोड़े लाभ के लिए सामान ढोए जा रहे है। प्रतिदिन यह खेल बड़े पैमाने पर हो रहा है। डिपो के अंदर भी सामान लादने में चालक-परिचालक तनिक भी गुरेज नहीं करते हैं। सबकुछ जानने के बाद भी जिम्मेदार आंख मूंदे तमाशा देख रहे हैं। यहां तक कि बीच में टिकट चेक करने वाले भी इस पर ध्यान नहीं देते है। दूरदराज को चलने वाली अधिकांश बसों पर बिना बुक कराए सामान लाद लिया जाता है। इसमें वहां उतारने वालों को चालक या परिचालक का नंबर दिया जाता है। वह बस पहुंचने की निर्धारित समय पर सामान ले लेता है। रोडवेज बसों से सामान बुक कराकर एक से दूसरे स्थान पर पहुंचाने के लिए बाकायदा व्यवस्था की गई है। सामान के वजन के मुताबिक उसके किराये का निर्धारण होता है। यह धनराशि सीधा सरकारी खजाने में पहुंचती है। बसों से सामान तो ढोए जा रहे, लेकिन उससे होने वाली कमाई सरकारी खजाने में नहीं जाती है।

पशु आश्रय स्थल की दुर्दशा देख भड़के सीडीओ, कार्यवाई की दी चेतावनी

रतनपुरा, मऊ। पशु आश्रय स्थल की दुर्दशा देख भडके मुख्य विकास अधिकारी, जमकर लगाई लताड़ और दी कार्यवाई की चेतावनी मुख्य विकास अधिकारी शुक्रवार को पशु आश्रय स्थलों की हकीकत जानने अईलख पहुंचे। वहां संतुष्ट नजर आए। मुख्य विकास अधिकारी पशुओं के खाने के स्थान पर ऊपर शेड लगाने का निर्देश दिया ताकि पशुओं को धूप में खड़ा होकर आहार न लेना पड़े। इसके पश्चात वह कुड़वा मानिकपुर स्थित पशु आश्रय स्थल पहुंचे और वहां की गंभीर दुर्दशा देखकर पूरी तरह भड़क गए। वहां व्यवस्था नाम की कोई चीज ही नहीं थी कोई भी व्यवस्था मुकम्मल नहीं थी। पशुओं के लिए चारे की भी व्यवस्था नहीं थी हरा चारा भी नहीं था न भूसा था साफ सफाई की व्यवस्था भी नदारद थी। कुल मिलाकर वहां भारी अव्यवस्था का आलम दिखा यह देख मुख्य विकास अधिकारी

भड़क गए और उन्होंने एनजीओ द्वारा चलाए जा रहे इस पशु आश्रय स्थल के संचालक को जमकर खरी-खोटी सुनाई। इस दौरान उपस्थित ग्रामवासियों ने भी पशु आश्रय स्थल की व्यवस्था को लेकर मुख्य विकास अधिकारी के सामने अनेक शिकायतें दर्ज कराई यह सब सुन और देख कर मुख्य विकास अधिकारी ने संचालक को खरी खोटी सुनाते हुए कहा कि ऐसा नहीं चलेगा यह गंभीर मामला है और इस पर कार्रवाई अवश्य होगी। शासन की मंशा के विपरीत किया जाने वाला कोई भी कार्य बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने एनजीओ संचालक को समस्त आवश्यक प्रपत्रों के साथ सोमवार को अपने कार्यालय में मिलने के लिए निर्देशित किया। ज्ञातव्य है कि इसी एनजीओ के तहत बगली पिजड़ा पशु आश्रय स्थल का भी संचालन किया जाता है। उन्होंने दोनों पशु आश्रय स्थलों की पूरी रिपोर्ट तलब की और कहा यह गंभीर अनियमितता का मामला है इस पर अवश्य ही कार्रवाई की जाएगी।

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
गुजरात	5	4	1	8
राजस्थान	5	3	2	6
पंजाब	5	3	2	6
कोलकाता	6	3	3	6
लखनऊ	5	3	2	6
बेंगलोर	5	3	2	6
हैदराबाद	5	3	2	6
दिल्ली	4	2	2	4
चेन्नई	5	1	4	2
मुंबई	5	0	5	0

ऑरेंज कैप

जोस बटलर
272 रन
राजस्थान रॉयल्स

पर्पल कैप

युजुवेन्द्र चहल
12 विकेट
राजस्थान रॉयल्स

खबर संक्षेप

फ्रेंच ओपन में भाग ले सकते हैं जोकोविच

नई दिल्ली। दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच के फैन्स के लिए अच्छी खबर है। जोकोविच आगामी फ्रेंच ओपन में खेलने जा रहे हैं क्योंकि फ्रांस सरकार ने विदेशी यात्रियों के लिए प्रवेश नियमों में छूट दी है। साथ हीए कोविड-19 प्रोटोकॉल में भी ढील दी है। जोकोविच ने 2021 में फ्रेंच ओपन जीता था। इस साल की शुरुआत में जोकोविच को ऑस्ट्रेलिया से निर्वासित कर दिया गया था क्योंकि वह वैक्सीनेशन संबंधित दस्तावेज पेश करने में विफल रहे थे। इसके चलते जोकोविच ऑस्ट्रेलियन ओपन 2022 में भाग नहीं ले पाए थे।

स्पोर्ट्स18 नाम से नया खेल चैनल शुरू

मुंबई। मनोरंजन से जुड़ी कंपनी वायकॉम18 ने शुक्रवार को स्पोर्ट्स18 नाम से नया खेल चैनल शुरू करने की घोषणा की। वायकॉम में यहां जारी विज्ञप्ति में दावा किया कि एसडी और एचडी पर उपलब्ध यह 'पे-टीवी' चैनल खेल प्रेमियों को भारत में सर्वश्रेष्ठ खेल सामग्री मुहैया करेगा। स्पोर्ट्स 18 कतर में इस साल के आखिर में होने वाले फीफा विश्व कप, एनबीए, ला लिगा, लीग1, सेरी ए, अबू धाबी टी10 तथा शीर्ष एटीपी (टेनिस) और बीडब्ल्यूएफ (बैडमिंटन) प्रतियोगिताओं का प्रसारण करेगा।

धम्मिका प्रसाद ने शुरू किया भूख हड़ताल

कोलंबो। श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर धम्मिका प्रसाद ने देश के नेताओं से ईस्टर के दिन हुए आतंकी हमले के शिकार और मौजूदा आर्थिक संकट से जूझ रहे द्वीपीय देश के लोगों के लिए न्याय की मांग करते हुए शुक्रवार को 24 घंटे की भूख हड़ताल शुरू की। प्रसाद 2019 ईस्टर के दिन रविवार को हुए बम धमाकों के शिकार लोगों के लिए न्याय की मांग के लिए विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के सचिवालय के निकट गॉल फेस एस्प्लांडे में वह रापजक्षे के खिलाफ विरोध कर रहे गुट के साथ शामिल हो गये।

बदलाव के दौर से गुजर रही मुंबई इंडियंसः सूर्या

मुंबई। स्टार बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस के प्रदर्शन को लेकर सभी से संयम बरतने की बात करते हुए कहा कि टीम इस समय बदलाव के दौर से गुजर रही है जिससे आगामी सत्रों में बेहतर परिणाम मिलेंगे। मुंबई इंडियंस शुरुआती पांच मैच गंवा चुकी है और उसके लिए प्लेऑफ की दौड़ में वापसी करना लगभग असंभव दिख रहा है क्योंकि उन्हें इसके लिए अब बचे हुए नौ मैचों में से कम से कम आठ में जीत दर्ज करनी होगी।

आईपीएल में कोरोना की एंट्री : दिल्ली कैपिटल्स के फिजियो पॉजिटिव, आज के मैच पर बना सस्पेंस

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा सीजन पर कोविड-19 का साया मंडराने लगा है। दिल्ली कैपिटल्स के फिजियो पैट्रिक फरहार्ट कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए है। आईपीएल की ओर से जारी मीडिया विज्ञप्ति में इस बात की जानकारी दी गई है। फिलहाल दिल्ली कैपिटल्स की मेडिकल टीम फरहार्ट पर निगरानी कर रही है।

■ कैपिटल्स की मेडिकल टीम फरहार्ट पर कर रही निगरानी

कोरोना महामारी के चलते आईपीएल का पिछला सीजन काफी प्रभावित हुआ था। 4 मई 2021 को आईपीएल के सीजन को सस्पेंड करना पड़ा था यह घोषणा सनराइजर्स हैदराबाद के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋद्धिमान साहा और दिल्ली कैपिटल्स के स्पिनर अमित मिश्रा के कोविड-19 पॉजिटिव पाए जाने के बाद की गई थी। लीग के स्थगित होने के समय तक कुल 29 लीग मैचों का आयोजन हुआ था। बाद में बीसीसीआई ने बाकी बचे मुकाबलों को यूएई में सफलतापूर्वक आयोजित किया। कोविड-19 के कारण 2020 में आईपीएल का आयोजन यूएई में जैव सुरक्षित वातावरण में किया गया था।

कोविड का पहला मामला

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व फिजियो फरहार्ट के बारे में बयान में कहा गया, 'दिल्ली कैपिटल्स के फिजियो पैट्रिक फरहार्ट को कोविड-19 पॉजिटिव पाया गया है। यह आईपीएल के 15वें सीजन में कोरोना का पहला मामला है। दिल्ली कैपिटल्स की मेडिकल टीम इस समय उनका ध्यान रख रही है।' कोरोना मामलों में बढ़ोतरी से दो महीने तक चलने वाले आईपीएल में कोविड का खतरा बढ़ गया है।

क्रिकेट पर कोरोना का काफी प्रभाव

क्रिकेट के खेल पर कोविड-19 का कुछ ज्यादा ही प्रभाव पड़ा है। अब आईपीएल के मौजूदा सीजन में ताजा घटनाक्रम ने बीसीसीआई की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। पिछले साल इंग्लैंड दौरे पर भारतीय दल में कोविड-19 मामलों की पुष्टि के बाद भारत ने इंग्लैंड का दौरा बीच में ही छोड़ दिया था। अब उस दौरे का बचा हुआ पांचवां टेस्ट मैच जुलाई 2022 में होने वाला है।

दिल्ली/बेंगलोर के मैच पर बना सस्पेंस

दिल्ली कैंप से इस तरह की खबर सामने आने पर अब दिल्ली और आरसीबी के मैच पर सस्पेंस बन गया है जो शनिवार को खेला जाना है। पैट्रिक के पाजिटिव होने की पुष्टि बीसीसीआइ ने भी एक बयान के जरिए कर दी जिसमें कहा गया कि दिल्ली कैपिटल्स के फिजियो पैट्रिक फरहार्ट कोविड पाजिटिव पाए गए हैं और मेडिकल टीम उनकी कड़ी निगरानी कर रही है।

खास खबर

चेन्नई को बड़ा झटका चाहर आईपीएल से बाहर

चेन्नई सुपर किंग्स के तेज गेंदबाज दीपक चाहर पीठ में चोट लगने के चलते इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा सीजन से बाहर हो गए हैं। आईपीएल की ओर से शुक्रवार को आधिकारिक विज्ञप्ति जारी कर इस बात की घोषणा की गई। दीपक चाहर चोट के चलते सीएसके के लिए पहले पांच मुकाबलों में भी भाग नहीं ले पाए थे।

14 करोड़ में बिके थे चाहर

हाल ही में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले गए तीसरे टी-20 मुकाबले में दीपक चाहर चोटिल हो गए थे जिसके चलते वह अपना ओवर भी पूरा नहीं कर पाए थे। दीपक चाहर को आईपीएल 2022 की मेगा नीलामी में चेन्नई सुपर किंग्स ने 14 करोड़ रुपए की कीमत देकर खरीदा था।

रसिक सलाम भी बाहर

उधर, कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए 2 मैच खेलने वाले रसिक सलाम भी पीठ के निचले हिस्से में चोट के कारण पूरे सीजन से बाहर हो गए हैं। रसिक की जगह केकेआर ने तेज गेंदबाज हर्षित राणा को बाकी मैचों के लिए रसिक डार के स्थान पर अनुबंधित किया है। दिल्ली के रहने वाला हर्षित राणा 20 लाख के आधार मूल्य पर केकेआर में शामिल होंगे। रसिक डार ने केकेआर के लिए इस सीजन दो मैच खेले हैं।

डबल हेडर आज

हार की लय तोड़ने बेताब मुंबई

मुंबई। नीलामी में खराब योजना के कारण परेशानी में घिरी मुंबई इंडियंस शनिवार को जब यहां इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ मैदान पर उतरेगी तो उसका उद्देश्य पांच मैचों के हार के सिलसिले को तोड़ने के साथ आदर्श संयोजन खोजने का भी होगा। यह पहली बार नहीं है जब मुंबई इंडियंस को पांच मैचों में लगातार हार मिली हो लेकिन यह शायद पहली बार है जब ऐसा लग रहा है कि टीम के 'थिंक टैंक' के पास इससे बाहर निकलने के लिए कोई योजना नहीं दिख रही है।

हर्षल की वापसी से बेंगलोर गदगद

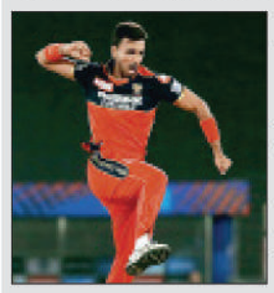

मुंबई। पिछले मैच में मौजूदा चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स से हारने के बाद रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) अब हर्षल पटेल की वापसी से दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ शनिवार को यहां होने वाले आईपीएल मैच में अपना अभियान फिर से पटरी पर लाने की कोशिश करेगा। आरसीबी ने लगातार तीन जीत से अपने अभियान की शानदार शुरुआत की थी लेकिन चेन्नई ने पिछले मैच में उसे 23 रन से हरा दिया था। टीम को इस मैच में हर्षल की कमी खली थी क्योंकि कप्तान फाफ डुप्लेसी के पास शिवम दुबे और रोबिन उथप्पा को रोकने के लिए विकल्प नहीं थे।

आईपीएल

राहुल का ये दूसरा अर्धशतक, 5 पारियों में बना चुके 171 रन

राहुल और मार्करम के धमाके से हैदराबाद की 'हैट्रिक' जीत

एजेंसी ▶▶ मुंबई

सनराइजर्स हैदराबाद ने शुक्रवार को आईपीएल के मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स को सात विकेट से हरा दिया। उन्होंने केकेआर को आठ विकेट पर 175 रन पर रोक दिया। जवाब में राहुल त्रिपाठी ने 37 गेंद में 71 और एडेन मार्करम ने 36 गेंद में नाबाद 68 रन बनाकर सनराइजर्स को लगातार तीसरी जीत दिलाई। सनराइजर्स ने 13 गेंद बाकी रहते मैच जीत लिया। अब उसके नाम पांच मैचों में तीन जीत है जबकि केकेआर की छह मैचों में यह तीसरी हार थी।

इससे पहले आंद्रे रसेल और नीतिश राणा ने कोलकाता नाइट राइडर्स को शुरुआती संकट से निकालकर आठ विकेट पर 175 रन तक पहुंचाया। नितीश राणा ने सबसे ज्यादा 54 रन की पारी खेली, जबकि आंद्रे रसेल ने 25 गेंदों पर नाबाद 49 रन बनाए। हैदराबाद के लिए टी नटराजन ने तीन विकेट चटकाए।

राहुल का 8वां अर्धशतक

राहुल त्रिपाठी ने 21 गेंदों में अपने आईपीएल कॅरियर का 8वां अर्धशतक पूरा किया। राहुल 71 रन बनाकर रसेल की गेंद पर आउट हुए। त्रिपाठी की ये इस साल और हैदराबाद के लिए ये पहली फिफ्टी है। इस सीजन राहुल 5 पारियों में 171 रन बना चुके हैं।

केन के 2000 रन पूरे : मैच में 8 रन बनाने के साथ ही केन विलियमसन ने आईपीएल और हैदराबाद के लिए अपने 2,000 रन पूरे कर लिए। हैदराबाद के लिए 2 हजार रन बनाने वाले वह डेविड वार्नर (4014) और शिखर धवन (2518) के बाद तीसरे खिलाड़ी बने। हालांकि केन बड़ी पारी नहीं खेल सके और 16 गेंदों में 17 रन बनाकर रसेल की गेंद पर बोल्ड हुए।

रसेल का स्ट्राइक रेट 196

आंद्रे रसेल ने आतिशी पारी खेलते हुए 25 गेंदों पर नाबाद 49 रन बनाए। रसेल का स्ट्राइक रेट 196 का रहा। केकेआर की पारी के आखिरी ओवर में टी-20 स्पेशलिस्ट खिलाड़ी ने 16 रन बनाए। ओवर की चौथी गेंद पर उन्होंने स्क्वायर लेग के ऊपर से सिक्स लगाया।

स्कोर बोर्ड

कोलकाता नाइट राइडर्स	रन	गेंद	4	6
वेंकटेश अय्यर बो नटराजन	06	13	1	0
शिव का पूरन बो जानसेन	07	05	0	1
श्रेयस अय्यर बो मलिक	28	25	3	0
नारायण का साबाक बो नटराजन	06	02	0	1
राणा का पूरन बो नटराजन	54	36	6	2
जैक्सन का नटराजन बो मलिक	07	07	0	1
आंद्रे रसेल नाबाद	49	25	4	4
कमिंस का जानसेन बो कुमार	03	03	0	0
अमन हकीम खान बो कुमार	05	03	1	0
उमेश यादव नाबाद	01	01	0	0

अतिरिक्त : 09, कुल : 20 ओवर में 175/8

गेंदबाजी : भुवनेश्वर 4-0-37-1, जानसेन 4-0-26-1, नटराजन 4-0-37-3, मलिक 4-0-27-2, साबाक 1-0-10-0, त्रिपाठी 3-0-32-1.

सनराइजर्स हैदराबाद	रन	गेंद	4	6
अभिषेक शर्मा बो कमिंस	03	10	0	0
केन विलियमसन बो रसेल	17	16	3	0
राहुल का वेंकटेश बो रसेल	71	37	4	6
एडेन मार्करम नाबाद	68	36	6	4
निकोलस पूरन नाबाद	05	08	0	0

अतिरिक्त : 12, कुल : 17.5 ओवर में 176/3

गेंदबाजी : यादव 4-0-31-0, कमिंस 3.5-0-40-1, रसेल 2-0-20-2, अजमन 1-0-13-0, चक्रवर्ती 3-0-45-0, नारायण 4-0-23-0.

प्रो लीग : भारत ने दूसरे मैच में जर्मनी को 3-1 से हराया

एजेंसी ▶▶ भुवनेश्वर

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने जर्मनी की अनुभवहीन टीम को दूसरे और आखिरी मैच में 3-1 से हराकर एफआईएच प्रो लीग की तालिका में शीर्ष पर अपनी स्थिति ओर मजबूत कर ली। भारत के लिए सुखजीत सिंह (19वां मिनट), वरुण कुमार (41वां) और अभिषेक (54वां) ने गोल दागे जबकि जर्मनी के लिए एकमात्र गोल एंटोन बोकेल (45वां) ने किया। भारत ने पहले मैच में जर्मनी को 3-0 से मात दी थी। भारत अब 12 मैचों में 27 अंक लेकर शीर्ष पर है जबकि जर्मनी 10 मैचों में 17 अंक के साथ दूसरे स्थान पर है। जर्मनी की 22 सदस्यीय टीम में से छह खिलाड़ियों ने इन दोनों मैचों के जरिए सीनियर स्तर पर पदार्पण किया है। इन दो जीत के साथ ही एफआईएच प्रो लीग में भारत का घरेलू अभियान खत्म हो गया।

अटकलों का दौर: भविष्य पर फैसला करने के लिए अभी काफी समय

नई दिल्ली। भारत की टेस्ट और वनडे कप्तान मिताली राज के अंतरराष्ट्रीय भविष्य को लेकर अटकलों का दौर जारी है लेकिन वह 18 अप्रैल से शुरू होने वाली महिला सीनियर टी20 ट्रॉफी में रेलवे का प्रतिनिधित्व करेंगी जो महिला विश्व कप के बाद उनकी पहली प्रतिस्पर्धी प्रतियोगिता होगी। पिछले महीने न्यूजीलैंड में भारतीय टीम के विश्व कप के शुरुआती चरण में बाहर होने के बाद मिताली और झूलन गोस्वामी का भविष्य चर्चा का विषय बना हुआ है। झूलन जहां विश्व कप के दौरान लगी चोट से उबर रही हैं तो मिताली रेलवे की टीम में अगली पीढ़ी की खिलाड़ियों का मार्गदर्शन करेंगी। दोनों ही 39 वर्ष की हैं और अपने कॅरियर के अंतिम पड़ाव में हैं। बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा, 'मिताली युवा खिलाड़ियों के मार्गदर्शन के लिए टीम में होंगी। सीनियर खिलाड़ी के तौर पर वह अपनी भूमिका अच्छी तरह समझती हैं। वैसे भी वह जब राष्ट्रीय टीम के साथ नहीं होती तो वह घरेलू प्रतियोगितायें कभी नहीं छोड़तीं।'

टेनिस...

प्राग। चेक गणराज्य की मार्का वोंद्रोसोवा ने बिली जीन किंग कप प्ले-ऑफ मैच के दौरान चेक गणराज्य और ग्रेट ब्रिटेन के बीच टेनिस क्लब 1 में ग्रेट ब्रिटेन के हैरियट डार्ट के खिलाफ फोरहैंड शॉट खेला।

एशेज सहित पिछली कुछ श्रृंखलाओं में हार से आहत

इस्तीफा : जो रूट ने छोड़ी इंग्लैंड की टेस्ट कप्तानी

एजेंसी ▶▶ लंदन

एशेज सहित पिछली कुछ श्रृंखलाओं में हार से आहत जो रूट ने शुक्रवार को इंग्लैंड के टेस्ट क्रिकेट कप्तान पद से त्यागपत्र दे दिया, जिससे उनके पांच साल के चुनौतियों से भरे कार्यकाल का भी अंत हो गया। रूट ने कहा, 'मुझे अपने देश की अगुवाई करना पसंद है लेकिन हाल में मुझे अहसास हुआ कि इससे मुझ पर कितना गहरा असर पड़ रहा है।'

■ इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान के रूप में सर्वाधिक मैचों में जीत का रिकार्ड

इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान के रूप में 31 वर्षीय रूट के नाम पर सर्वाधिक मैचों में जीत का रिकार्ड है। उनकी अगुवाई में इंग्लैंड ने 27 मैच जीते हैं जो माइकल वान से एक अधिक तथा एलिस्टेयर कुक और एंड्रयू स्ट्रास से तीन अधिक है। एक बल्लेबाज के रूप में रूट की टीम की जगह सुनिश्चित है क्योंकि 2021 के बाद से उन्होंने आठ शतक जमाए हैं और वह दुनिया में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों में शामिल हैं। लेकिन पिछले 17 टेस्ट मैचों में इंग्लैंड केवल एक मैच में जीत दर्ज कर पाया है जो 1980 के बाद टीम का सबसे खराब प्रदर्शन है। इससे रूट की कप्तानी पर सवाल भी उठने लगे थे।

आस्ट्रेलिया में एशेज श्रृंखला में 0-4 से करारी शिकस्त झेलने के बाद इंग्लैंड पिछले महीने वेस्टइंडीज से टेस्ट श्रृंखला में 0-1 से हार गया था। यह उसकी टेस्ट श्रृंखलाओं में लगातार चौथी हार है। यदि भारत जुलाई पिछले साल की श्रृंखला के एकमात्र बचे टेस्ट में जुलाई में उसे हरा देता है तो यह उसकी लगातार पांचवीं हार हो जाएगी।

सबसे चुनौतीपूर्ण फैसला

रूट ने कहा, 'यह मेरे कॅरियर का सबसे चुनौतीपूर्ण फैसला रहा है, लेकिन अपने परिवार और अपने करीबी लोगों के साथ इस बारे में चर्चा करने के बाद मुझे लगा कि (कप्तानी छोड़ने के लिए) यह समय सही है।' रूट ने 2017 में कुक से कप्तानी संभाली थी। वह एक बल्लेबाज के रूप में खेलना जारी रखना चाहते हैं। वह कुक के बाद इंग्लैंड की तरफ से सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं।

टीम कोच विहीन

इससे इंग्लैंड की टीम अभी न सिर्फ कप्तान बल्कि कोच विहीन भी हो गई है क्योंकि क्रिस सिल्वरवुड और एशले जाइल्स पहले ही क्रमशः कोच और क्रिकेट निदेशक का पद छोड़ चुके हैं। बेन स्टोक्स कप्तान बनने की दौड़ में सबसे आगे है हालांकि इस आलराउंडर ने मानसिक स्वास्थ्य कारणों से बाहर रहने के बाद हाल में टीम में वापसी की है।

वर्ल्ड रिकॉर्ड: मालिनिन ने हासिल किए 88.99 अंक

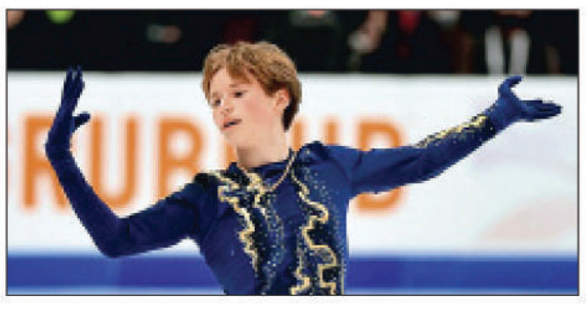

एजेंसी ▶▶ ताल्लिन

अमेरिकी फिगर स्केटर इलिया मालिनिन ने जूनियर फिगर स्केटिंग विश्व चैंपियनशिप के 'शॉर्ट प्रोग्राम' में 88.99 अंक हासिल करके नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। सत्रह वर्षीय मालिनिन ने 84.87 अंकों के पिछले रिकॉर्ड को आसानी से पार किया, जिसे वर्तमान विश्व चैंपियन शोमा ऊनो ने 2015 में जूनियर चैंपियनशिप में बनाया था। मालिनिन पिछले महीने सीनियर विश्व चैंपियनशिप में नौवें स्थान पर रही थी जबकि जनवरी में अमेरिकी चैंपियनशिप में उन्होंने दूसरा स्थान हासिल किया था। कनाडा की वेस्ली चिउ 81.59 अंकों के साथ दूसरे और एस्तोनिया की मिहैल सेलेव्को 81.26 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रही।

महिला काशी दर्पण का 12वां पद ग्रहण समारोह संपन्न

शिखा अग्रवाल अध्यक्ष और शालिनी अग्रवाल सचिव पद पर हुई नियुक्त

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। महिला काशी दर्पण का 12वॉ पद ग्रहण समारोह होटल "रमाडा" वाराणसी में आज सम्पन्न हुआ। पद ग्रहण समारोह में शामिल

महिलाओ ने बताया की गत वर्ष 2021 - 2022 की अध्यक्षा श्रीमती हीमा रस्तोगी को जहाँ हम सभी ने भावभीनी विदाई दी वही नये सत्र 2022 - 2023 के लिए श्रीमती शिखा अग्रवाल को अध्यक्ष और श्रीमती शालिनी अग्रवाल को सचिव पद के लिए सर्वसम्मति से सभी ने स्वागत किया। सत्र बदलने के साथ ही नई अध्यक्ष नई उमंग के साथ पदासीन होती है और अपनी नई सोच के साथ नये नये-नये कार्यक्रम के साथ संस्था को एक नई ऊँचाई पर ले जाते है। इस वर्ष पद ग्रहण समारोह पर लता जी को श्रद्धांजली देते हुए उनके गाये गानों पर नृत्य व गायन का आयोजन संस्था की सदस्यों द्वारा किया गया है। महिलाओं ने बताया की हमारी फाउण्डर मीनाक्षी भाभी का हमेशा से यही प्रयास रहता है कि महिलाओं की छिपी हुई प्रतिभा को बाहर निकालना। यह मंच उन्होने महिलाओं के बेहतर सोच के साथ आगे आने के लिए बनाया है। इससे महिलाओं को आत्मनिर्भर होना समाजसेवा जैसे कार्यों के लिए प्रेरित किया और वह इस नेक कार्य में सफल भी रही। कार्यक्रम में संस्था की सदस्यों ने किया रंगारंग कार्यक्रम जिसमें मुख्य रूप से -

दिव्या - जहाँ में जाती हूँ होटो पे ऐसी बात। मुस्कान - लग जा गले, वो चलो, वो चली देखो प्यार की गली। वर्षा केशरी - मोरनी बागा में बोले। स्वर - रूपाली - अजीब दास्ता है। स्वर - शिल्पी तेरा मेरा प्यार अमर। सीमा जायसवाल - दो घुटं मुझे भी पिला दें।

हिमा - जीया जले जा जले । आज के रंगारंग प्रोग्राम में संस्था की संस्थापिका मीनाक्षी अग्रवाल और पूर्व अध्यक्षाएं नीलू ,सरिता, ज्योति, नीधि, शालिनी, विनीता, संगीता उपस्थित थी। संस्था की अध्यक्षा शिखा की उपस्थिति में इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें नुपूर, शगुन, नेहा, रश्मि, संगीता, मोनिका आदि सम्मिलित थी। कार्यक्रम का सफल संचालन संगीता और निधी ने किया अन्त में धन्यवाद ज्ञापन सचिव शालिनी ने दिया।

गाजीपुर के प्रथम सांसद हर प्रसाद सिंह जी की पुण्यतिथि पर दी गयी श्रद्धांजलि

प्रखर गाजीपुर। जनपद के प्रथम सांसद और स्वतंत्रता सेनानी रहे श्रद्धेय स्व हर प्रसाद सिंह की पुण्यतिथि 15 अप्रैल 2022 को कोयला घाट , गाजीपुर में ठाकुर द्वारा के प्रांगण में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी और उन्हें याद किया गया। इस श्रद्धांजलि सभा मे उनके पौत्र ओम प्रकाश सिंह, विजय प्रकाश सिंह और वहाँ उपस्थित लोगों ने उनकी तस्वीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनको नमन किया। इस अवसर पर छात्र नेता और समाजवादी चिंतक डॉ शम्मी कुमार सिंह ने कहा कि श्री हर प्रसाद सिह जी का जन्म सैदपुर तहसील के परसनी गाँव मे 1 दिसम्बर 1900 ई में हुआ था । उनके पिता श्री फतेहबहादुर सिह खुद एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उन्ही के पद चिन्हों पर चलते हुए वह सन 1930 ई में सविनय अवज्ञा आंदोलन में सत्याग्रह करते हुए पहली बार जेल गए। उनके साथ उनकी पत्नी केसरी देवी भी जेल गयी थी । इसके साथ ही वह कांग्रेस के जिलाध्यक्ष रहते हुए तथा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य होते हुए पूरे जनपद गाजीपुर में स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगाते रहे और कई बार जेल यात्राएं की।

पहले आम चुनाव 1952 में वह कांग्रेस से चुनाव लड़ते हुए लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए। भाजपा नेता योगेश सिह ने उनको याद करते हुए उनके कोआपरेटिव आंदोलनों के जिक्र किया और उन्होंने बताया कि गाजीपुर में कोआपरेटिव क्रांति के जनक हर प्रसाद सिंह जी ही माने जाते है। वह हम सभी लोगो को सत्तासी साल की अवस्था मे आज ही के दिन 15 अप्रैल 1987 को छोड़ कर चले गए। इस अवसर पर रूपेश सिह, फजलूल इस्लाम शीबू , पंकज पांडेय ,शशांक उपाध्याय , रिंकू सिह सहित गाजीपुर के गणमान्य लोग मौजूद रहे। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन अतुल सिह ने किया।

नकल करते हुए पकड़े गए 3 परीक्षार्थी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। बीएड प्रथम सेमेस्टर चल रही है। आज दिन शनिवार को सुबह की पाली की परीक्षा में पीजी कालेज परीक्षा केंद्र पर कुल 2454 परीक्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें 30 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। प्राचार्य डा. राघवेंद्र कुमार पांडेय ने बताया कि परीक्षा में किसी प्रकार की दुर्व्यवस्था न फैले, इसका पूरी तरह से ध्यान रखा गया। उन्होंने बताया कि नकल करते हुए 3 परीक्षार्थी पकड़े गए। उन्होंने बताया कि आज सायकालीन परीक्षा नहीं है। उन्होंने कहा कि परीक्षा को नकलविहीन संपन्न कराने के लिए कालेज प्रशासन पूर्णतया कटिबद्ध है।

प्राथमिक विद्यालय में कक्षा पांच में तृतीय स्थान प्राप्त छात्र किशन पटेल को किया गया सम्मानित

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। मानव चेतना परख समिति के तत्वावधान में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में जिले कक्षा पांच में प्राथमिक विद्यालय रघुनाथपुरा, बड़ागावं में तृतीय स्थान प्राप्त बालक किशन पटेल को सम्मानित किया गया। प्रतिभा समारोह का संयोजन समिति के महामंत्री राकेश कुमार पांडेय और संचालन समिति के संरक्षक आरुणी चन्द्र सिन्हा ने किया। इस अवसर पर समिति रोहित विश्वकर्मा, मीडिया प्रभारी आयुष श्रीवास्तव, राजन जी के साथ ही गरिमामय उपस्थिति ग्राम प्रधान प्रतिनिधि श्री लक्ष्मी शंकर, विधालय के प्रधानाध्यापक और सभी सहायक अध्यापक आदि उपस्थित थे।

महा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन ने उप जिलाधिकारियों को सौंपा पत्रक

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। महा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन जनपद इकाई गाजीपुर की समस्त तहसील इकाइयों के अध्यक्षों ने जिला अध्यक्ष उपेन्द्र यादव के निर्देश के अनुपालन में अपने-अपने तहसील मुख्यालय पहुंच कर संबंधित एसडीएम को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। बताते चले कि बलिया जनपद के पत्रकारों को जेल से रिहा करने एवं अन्य मुद्दों पर महाग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन तहसील ईकाई के सदस्यों ने उपजिलाधिकारी सैदपुर को मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा। महा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के तहसील इकाई जमानियाँ के तहसील अध्यक्ष के नेतृत्व में जमानियां के पत्रकारों ने बलिया में गिरफ्तार किए गए पत्रकारों को जल्द से जल्द रिहा करने व दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई करने के लिए अल्टीमेटम देते हुए कहा की अगर हमारी मागो को पूरा नहीं किया गया तो हम बड़े आन्दोलन के लिये बाध्य होंगे, जिसकी सारी जिम्मेदारी शासन व प्रशासन की होगी। इस मौके पर

तहसील अध्यक्ष जफर इकबाल के साथ सलीम मंसूरी, संदीप गुप्ता, पिन्टू मौर्य, आजाद सिंह, राजीव रत्न इत्यादि लोगों ने उपजिलाधिकारी भारत भार्गव व तहसीलदार जमानिया को ज्ञापन सौंपा। इसी क्रम में महा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन इकाई सैदपुर ने उपजिलाधिकारी सैदपुर को पत्रक सौंपा। बता दे की बलिया जनपद के पत्रकारों को पेपर लीक मामले में जेल भेज दिया गया। इस पर कार्यवाही पत्रकारों के ऊपर की गई। इस विषय में महा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन तहसील इकाई सैदपुर का पत्रकार संगठन आलोचना करते हु मुख्यमंत्री से मांग करता है कि पत्रकारों को फर्जी मुकदमे में फंसाया न जाए। फर्जी मुकदमा वापस लिया जाए तथा गिरफ्तार पत्रकारों को अविलंब रिहा किया जाए और जो भी अधिकारी पत्रकारों की कलम को कमजोर करना चाहते हैं उनके खिलाफ महा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन मजबूर होकर आंदोलन के साथ साथ खबरों का बहिष्कार करने सहित अनेक निर्णय लेने के लिए बाध्य होगा। जिसकी सारी जिम्मेदारी संबंधित स्थानीय प्रशासन की होगी।

पिता की पुण्य स्मृति पर शिक्षिका बेटी ने मनाया दान उत्सव

सहायक अध्यापिका ऋचा सिंह ने विद्यालय को पुस्तक रखने की आलमारी और बच्चों में उपहार किया वितरण

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। इस धरती पर पिता उस घने वृक्ष की तरह होते हैं जो बच्चों को शीतल छाया देते हैं। पिता अपने सुख की परवाह किए बिना अपने परिवार के लिए समर्पित होकर जिम्मेदारीयो का निर्वहन करते हैं।लेकिन जब पिता इस धरती से दूर दूसरी दुनियां में चले जाते हैं। फिर पिता के दिखाए गए रास्ते उनके बताए संस्कार ही रह जाते हैं। यह कहना है उस बेटी का जो पिता की स्नेहिल छाया में शिक्षिका बनकर नौनिहालों का भविष्य संवार रहीं हैं और पिता की पुण्यतिथि को यादगार बनाने के लिये रिचा सिंह दान उत्सव मना रही हैं। इस उपलक्ष्य में शनिवार को कम्पोजिट विद्यालय आशापुर चिरईगांव में सहायक अध्यापिका ऋचा सिंह ने अपने पिता स्वर्गीय राणा भूपेंद्र प्रताप सिंह के पुण्य स्मृति में दान उत्सव कार्यक्रम का आयोजीत किया। इस दान उत्सव कार्यक्रम में उन्होंने विद्यालय को

एक पुस्तक रखने हेतु एक अलमारी और विद्यालय में पढ़ने वाले सभी छात्रों को उपहार वितरित किया।इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम में आये छात्रों के अभिभावकों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला महिला कल्याण अधिकारी, विद्यालय प्रभारी प्रधानाचार्य अध्यापिका इकबाल बानो,सहायक अध्यापिका सुनीता यादव, सहायक अध्यापिका नीलम त्रिपाठी, अर्चना चौहान, चन्द्ररेखा सिंह , ऋचा सिंह, प्रज्ञा शर्मा ,वैशाली यादव ,विमल प्रकाश , धर्मेन्द्र कुमार यादव ,रेखा सिंह ,मनीष कुशवाहा (एआरपी हिन्दी) ,आलोक मौर्या (एआरपी अंग्रेजी) ,राजीव सिंह (एसआरजी), राणा इन्द्र प्रताप सिंह अधिवक्ता ,राणा शैलेन्द्र कुमार सिंह , राणा धीरेन्द्र सिंह ,बृजेश दुबे , अधिवक्ता अखिलेश राय, चंद्रभान सिंह अधिवक्ता ,आनंद चतुर्वेदी अधिवक्ता ,गोपाल नारायण सिंह , अमर देव यादव ,सरीता यादव सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहें।

मुकदमा वापस नहीं हुआ तो होगा कार्य बहिष्कार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग उत्तर प्रदेश की बैठक शनिवार को विकास भवन पर आहुत की गई। बैठक को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि सात अप्रैल को द्वितीय पाली में इण्टर भौतिक विज्ञान परीक्षा के दौरान केद्र से करीब दो तीन किलोमीटर की दूरी पर एसटीएफ ने पंचायत भवन पर उत्तर पुस्तिकाओं के साथ छ लोगों को मौके से गिरफ्तार किया था, जिसमें एसटीएफ टीम द्वारा आठ लोगों को सैदपुर कोतवाली में अभियुक्त बनाया गया था। एफआईआर में स्टैटिक मजिस्ट्रेट विजय कुमार सिंह का कहीं भी नाम नहीं था। जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा आठ अप्रैल को विजय कुमार सिंह को अभियुक्त बनाया गया है। वक्ताओं ने कहा कि इस मामले की उच्च स्तरीय जांच करा कर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही की जाए। स्टैटिक मजिस्ट्रेट विजय कुमार सिंह पर किया गया फर्जी मुकदमा वापस नहीं हुआ तो उत्तर प्रदेश डिप्लोमा संघ कार्य बहिष्कार करने को बाध्य होगा।

हनुमान जन्म उत्सव पर नगर के हनुमान मंदिर पर विभिन्न कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

प्रखर रॉबर्ट्सगंज, सोनभद्र। हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर शनिवार को नगर के हनुमान मंदिरों पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर नगर के मेन रोड पर रामअवतार उपवन में अवस्थित बाल हनुमान मंदिर में निर्मल केडिया के संयोजन में एवं सीएमओ ऑफिस के पास श्री राम जानकी

संकट मोचन मंदिर पर पुजारी राजकुमार पांडे द्वारा श्री हनुमान जी महाराज का भव्य श्रृंगार मंगला आरती पूजन किया गया। और शीतला मंदिर के पास मेन रोड पर स्थित संकट हरण श्री सिद्ध हनुमान मंदिर से राम जी मोदनवाल के संयोजकत्व में ध्वज यात्रा निकाला गया, इस यात्रा का नेतृत्व काशी से आए डमरु वादक कर रहे थे। डमरुवादको की डमरू की डमडमाहट से सारा नगर गुंजायमान हो गया। डमरु इस ध्वज यात्रा का आकर्षण का मुख्य केंद्र रहा। वही यात्रा के दौरान भक्तजन हाथों में भगवा ध्वज लिए प्रभु श्री राम, बजरंगबली, हनुमान जी का जयकारा लगाते हुए चल रहे थे तथा दूसरी ओर भक्तिमय भजन की धुन पर स्त्रियां युवतिया,युवक थिरक रहे थे, ध्वज यात्रा के दौरान रथ पर बैठे हुए मयार्दा पुरुषोत्तम राम, माता जानकी एवं राम भक्त हनुमान के स्वरूप का दर्शन जहां नगर वासियों ने किया वहीं कुछ लोगों ने उनकी आरती भी उतारी। यह जुलूस संपूर्ण नगर में भ्रमण करते हुए संकट हरण श्री सिद्ध हनुमान मंदिर पर जाकर संपन्न हुई । तत्पश्चात मंदिर में भगवान की दिव्य आरती प्रसाद वितरण आदि का कार्यक्रम हुआ। इस ध्वज यात्रा में मुख्य रूप से समाज सेवी कृष्ण मुरारी गुप्ता, दीपक कुमार केसरवानी, संगम गुप्ता, धर्मवीर तिवारी, अजीत रावत, रामजी मोदनवाल, प्रदीप, सचिन, सानू, राजाराम केसरी, हर्षवर्धन केसरवानी, नीरज केसरी, मनोज, दिलीप, शुभम, साहिल, सत्यम, स्वयं, अशोक, माया देवी, पूनम, ऋषभ केसरी, बबिता, विकास, अंजू,रितेश, सरोज केसरी, संगीता गुप्ता, श्यामा देवी,प्रकाश केसरी, संतोष,सन्नू, शिव शंकर,मंगल, किशोरी, सचिन, पवन केसरी, गोविं गोविंद, उमेश, कमलेश, गणमान्य नागरिक इस यात्रा में शामिल रहे।

गाजीपुर गौरव सम्मान से सम्मानित हुए डा. अशोक द्विवेदी

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। साहित्य चेतना समाज का सैंतीसवां वार्षिकोत्सव एवं गाजीपुर गौरव अलंकरण समारोह (चेतना महोत्सव-2022) नगर के वंशीबाजार स्थित एक पैलेस के सभागार में हर्षोउल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में विगत चार दशकों से निरंतर प्रकाशित भोजपुरी पत्रिका पाती के सम्पादक मोहम्मदाबाद तहसील के सुल्तानपुर गांव निवासी डा. अशोक द्विवेदी को संस्था द्वारा दिए जाने वाले गाजीपुर गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही संस्था द्वारा चार वर्गों में आयोजित सामान्य ज्ञान, गणित, निबंध, चित्रकला एवं विचार-अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागियों को स्मृति-चिह्न व प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अपने सम्मान से अभिभूत डा. द्विवेदी ने कहा कि अपनों के बीच अपनों द्वारा दिया गया सम्मान सभी सम्मानों से महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ है। आगे उन्होंने कहा कि मैंने अपने जीवन में जो कुछ भी पाया है, वही अपनी रचनाओं में लौटाया है। जीवन-रस के उत्सव से रचना बनती है और ऐसी ही रचना श्रेष्ठ होती है। इस दौरान मुख्य अतिथि

पूर्व कुलपति प्रो. राममोहन पाठक ने कहा कि भाषा और साहित्य की शक्ति को समझना पड़ेगा। साहित्य और संस्कृति को छोड़कर बच नहीं सकते। जो समाज साहित्य रचेगा, वहीं बचेगा। इस दिशा में साहित्य चेतना समाज द्वारा किए जा रहे प्रयास की प्रशंसा करते हुए अपनी शुभकामना दी। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि कोई भी सृजन बिना अहंकार को विलीन किए नहीं हो सकता। व्यक्ति चेतना से समष्टि चेतना पैदा होती है। व्यक्ति चेतना से समष्टि चेतना विकसित होकर सृष्टि चेतना से परमेश्वरी चेतना की ओर बढ़ते हैं। साहित्य की चेतना ही मूल चेतना है, जिसके लिए यह संस्था पिछले सैंतीस वर्षों से सक्रिय है। संस्था के संस्थापक अमरनाथ तिवारी अमर ने संस्था के उद्देश्य एवं गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह में डी ड्रीम्स डांस एकेडमी के बाल कलाकारों ने देशभक्ति गीत पर भावनृत्य प्रस्तुत किया। सेंटजांस स्कूल की संगीत शिक्षिका माया नायर, कुमारी शुभ्रा पांडेय, कुमारी अंशिका सोनी, कुमारी एंजेल चौरसिया ने गीत प्रस्तुत किया। डा. अक्षय पांडेय, डा. कमलेश राय एवं डा. शशि प्रेमदेव ने काव्य-पाठ किया।

इस अवसर पर नवचन्द्र तिवारी, डा. श्रीकांत पांडेय, रणजीत सिंह एडवोकेट, हरिनारायण हरीश, आनंद अग्रवाल, डा. सानंद सिंह, सौरभ पांडेय, विनोद उपाध्याय, प्रभाकर त्रिपाठी, हर्षित श्रीवास्तव, मनोज सिंह, आशुतोष पांडेय, डा. रविनंदन वर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. ऋचा राय ने किया। अत में संस्था के संस्थापक अमरनाथ तिवारी "अमर" ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रभारी निरीक्षक के स्थान्तरण पर पुलिसकर्मियों ने दिया भावभीनी विदाई

प्रखर केराकत जौनपुर। प्रभारी निरीक्षक लक्ष्मण पर्वत और चौकी प्रभारी गोविंद देव मिश्र के जनपद स्थानांतरण पर कोतवाली में तैनात पुलिसकर्मियों और क्षेत्रीय आम जन ने शनिवार को शाम तीन बजे प्रभारी निरीक्षक और चौकी प्रभारी को भाव भीनी विदाई दिया। सात माह के अपने कार्यकाल में प्रभारी निरीक्षक लक्ष्मण पर्वत ने अपराध व अपराधियों की नकेल कसते हुए

क्षेत्र में शान्ति पूर्ण माहौल कायम रखा, अपने हसमुख मिजाज और फरियादियों से सीधे संवाद शैली के चलते उन्होंने आम जनता के दिलों में जगह बनाने में कामयाब रहे। इस अवसर पर प्रभारी निरीक्षक अपराध दिग्विजय सिंह, उपनिरीक्षक विवेकानंद सिंह, आरती सिंह,रामाश्रय यादव, सन्तोष यादव,विनीत मोहन पाठक,नरेन्द्र मोहन सिंह, हेड कांस्टेबल विष्णु यादव, हरिंदर कुमार, लालबहादुर कुमार, विजय शंकर यादव,अनिल सिंह, जयचन्द यादव अरविंद सिंह समेत तमाम पुलिसकर्मी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

ग्लोबल कायस्थ कान्फ्रेंस ने अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा के जीत पर दी बधाई

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। ग्लोबल कायस्थ कान्फ्रेंस वाराणसी की एक आवश्यक बैठक सिगरा स्थित कैम्प कार्यालय (सेंट मरियम स्कूल) में सम्पन्न हुई। बैठक तृणमूल कांग्रेस पार्टी के टिकट पर आसनसोल संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा जी की दो लाख से अधिक मतों पर निर्वाचित होने पर ग्लोबल कायस्थ कान्फ्रेंस परिवार ने बधाई और शुभकामनाएं दी तथा कार्यालय में मिठाई बांटकर खुशियां मनाई। बैठक में सर्वश्री शशिकान्त श्रीवास्तव राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रभारी पूर्वी उत्तर, मनोज श्रीवास्तव प्रबंधक सेन्ट मरियम स्कूल, निरंजन श्रीवास्तव, दीपेन्द्र श्रीवास्तव, विशाल श्रीवास्तव, जिलाध्यक्ष अभिषेक श्रीवास्तव ,पंकज महानगर अध्यक्ष, श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव महिलाध्यक्ष, राजेश श्रीवास्तव गुड्डू , अशोक श्रीवास्तव, प्रवीण वर्मा,रोशन श्रीवास्तव, जितेन्द्र श्रीवास्तव जित्तू, सुनील श्रीवास्तव, प्रबंधक सृजन आई ए एस एकेडमी, अभिषेक निगम, आयुष वर्मा, हिमांशु श्रीवास्तव,सतीश श्रीवास्तव संगनी, रितुराज श्रीवास्तव, अमित श्रीवास्तव, राजेश्वर श्रीवास्तव, शुभम श्रीवास्तव,उदय श्रीवास्तव,राज कुमार श्रीवास्तव, शशि श्रीवास्तव, रुबी श्रीवास्तव, कामिनी श्रीवास्तव, माधवी श्रीवास्तव, पिंकी श्रीवास्तव, रेखा श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

जनपद के एक युवक का गुजरात मे सड़क दुर्घटना में निधन

प्रखर ब्यूरो जंगीपुर/गाजीपुर। जंगीपुर थाना क्षेत्र के ग्राम अफजलपुर निवासी भाजपा पिछड़ावर्ग मोर्चा की जिला उपाध्यक्ष रंजू शर्मा के जेठ सोहन विश्वकर्मा के 26 वर्षीय पुत्र प्रदीप विश्वकर्मा, उँचीमाडल जिला मोरवी, गुजरात मे रहकर मजदूरी करते थे। प्रदीप कल 15 अप्रैल को सायंकाल 6 बजे अपने कमरे से निकल कर कहीं जा रहे थे। जहाँ उनकी सड़क दुर्घटना मे वाहन से कुचलकर मृत्यु हो गयी। कल 15 अप्रैल को सायंकाल निधन की खबर मिलते ही परिवार मे कोहराम मच गया। परिवार मे पिता सोहन विश्वकर्मा और माँ बासमती का रो रो कर हाल बेहाल है, जो रह रह कर बेहोश हो जा रही है। प्रदीप विश्वकर्मा पाँच माह पहले घर से गये गुजरात गये थे। उनके एक बडे भाई भी वहीं रहते थे लेकिन वो कुछ माह पहले घर चले आए थे। शेखपुर के ग्राम प्रधान धर्मेंद्र शर्मा ने शोक संतप्त परिजनों से मिलकर दुख प्रकट करते हुए उन्हें ढ़ाढ़स बंधाया।

पांच दिन वितरण के बीत गए और कोटेदारों के यहां नहीं पहुंचा खाद्यान्न- गिरीश तिवारी

प्रखर चिरईगाव वाराणसी। शासन द्वारा वितरण की तारीख का ऐलान हो गया है।12-4-2022से लेकिन आलम यह है कि पूरे प्रदेश में पांच दिन वितरण के बीत जाने के बाद भी अभी 60प्रतिशत कोटेदारों को खाद्यान्न नहीं मिला विपणन गोदामों पर गेहूं है तो चावल नहीं है।यही रोज हो रहा है। कोटेदार रोज गोदामों के चक्कर लगा रहे हैं।यह जानकारी आल इण्डिया फेयर प्राइज शाप डीलर्स फेडरेशन के कार्यकारी अध्यक्ष गिरीश तिवारी ने बताया। ऐसे में कैसे समय से वितरण हो पाना सम्भव नहीं दिखता है।शासन द्वारा यह आदेश जारी हुआ है।कि अप्रैल महीने में तीन बार खाद्यान्न वितरण कराया जायेगा।

लड़की का पीछा कर रास्ते मे छेड़खानी करने वाला अभियुक्त हुआ गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध तथा अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने के दृष्टिकोण से चलाये जा रहे अभियान के तहत प्रभारी निरीक्षक भुड़कुड़ा द्वारा आज दिन शनिवार 16 अप्रैल को सुबह करीब 7.35 बजे पाक्सो एक्ट से सम्बन्धित अभियुक्त आजिंक्य चौबे उर्फ चंदन पुत्र स्व. ज्योति शंकर चौबे उर्फ मुन्ना चौबे निवासी ग्राम कवला जखनियाँ थाना भुड़कुड़ा जनपद गाजीपुर उम्र 19 वर्ष को गिरफ्तार किया गया। जिसके विरुद्ध थाना स्थानीय पर मु.अ.सं. 0058/2022 धारा 354/354घ/504/506 भादवि व 9(L)/10 पाक्सो अधिनियम पंजीकृत है। बताते चले कि वादिनी मुकदमा की नाबालिग लड़की जो परिवर्तन कोचिंग जखनियाँ मे पढ़ने के लिए जाती थी। पिछले एक वर्ष से अभियुक्त आजिंक्य चौबे उर्फ चंदन द्वारा उक्त लड़की का पीछा कर रास्ते मे उससे अश्लील टिप्पड़ी करते हुए उसके साथ छेड़खानी किया करता था। 15 अप्रैल को समय करीब 5.30 बजे चौरसिया रेस्टोरेण्ट के पास आजिंक्य चौबे उर्फ चंदन उक्त लड़की के साथ पुनः अश्लील टिप्पड़ी करते हुए छेड़खानी करने लगा। लड़की द्वारा मना करने पर उसे गाली गुप्ता देते हुए उसके घर वालों को जान मरवाने की धमकी दी गयी। जिस बात पर पीड़िता की माता द्वारा थाने पर आकर मुकदमा पंजीकृत कराया गया। अभियुक्त आजिंक्य चौबे को आज दिन शनिवार 16 अप्रैल को समय 7.35 बजे सुबह दक्षिणी रेलवे क्रासिंग जखनियाँ से गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

भदवां में शरारती तत्वों ने बगीचे में लगाई आग सैकड़ों पेड़ जलकर राख

प्रखर दानगंज वाराणसी। चोलापुर क्षेत्र के भदवा गांव में शरारती तत्वों ने बगीचे में शर्पत (पतलो) में आग लगा दिया आग ने विकराल रूप ले लिया बगीचे में आम और बबूल के सैकड़ों पेड़ और पक्षी को भी भारी नुकसान हुआ है अच्छी बात यह रही कि आस पास के खेतों में गेहूं कट गया था अन्यथा बड़ी अनहोनी हो सकती थी ग्रामीण नितीश चौबे ने तुरंत इसकी सूचना दानगंज चौकी इंचार्ज वैद्यनाथ सिंह को दिया और डायल 112 को फायर ब्रिगेड को सूचना दिया चौकी इंचार्ज अपने फोर्स के साथ मौके पर पहुचे जिसमे सिपाही अखिलेश यादव आनंद पटेल हेड कांस्टेबल कन्हैया के साथ फायर ब्रिगेड की टीम भी मौके पर पहुची इसके बाद ग्रामीणों व फायर ब्रिगेड व पुलिस ने मिलकर ग्रामीण ,नितीश चौबे ,अमन चौबे, दीपक चौबे ,अभिनय चौबे, लालचंद यादव ,धर्मेन्द्र मिश्रा ,जितेंद्र चौबे और, प्रखर पूर्वांचल के पत्रकार राहुल चौबे मौके पर मौजूद रहे।

गंगा दशहरा में होगा विराट प्राकट्य उत्सव मेला अस्सी घाट पर

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। सिगरा स्तिथ प्रेस वार्ता में 7 जून को होने वाली गंगा दशहरा पर्व में बड़े आयोजन की तैयारी के संदर्भ में अध्यात्म गो सेवा मिशन ट्रस्ट के प्रमुख यमुना पुत्र गौ भक्त श्री पंकज

शास्त्री जी महाराज ने पत्रकारों को बताया कि उनकी संस्था द्वारा ब्रह्मराष्ट्र एकम और माँ गंगा सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को होने वाली गंगा दशहरा को भव्य रूप से मनाया जाएगा । ये कार्यक्रम 2 दिवसीय का होगा जिसमें प्रथम दिवस 8 जून को अस्सी घाट पर एक छोर से दूसरे छोर तक 5500 मीटर की लंबी साड़ी काशी में पहली बार माँ गंगा को भावपूर्ण और रीति रिवाजों से अर्पित की जाएगी और सांध्यकालीन में सांस्कृतिक संध्या से माँ गंगा के गुणों का गायिकी वंदन होगा। दूसरे दिन 9 जून को अन्नकूट का 56 भोग लगाया जाएगा जिसमे लाखो श्रद्धालुओं को दर्शन भोग के पश्चात महाप्रसाद का वितरण किया जाएगी। वहीं इस कार्यक्रम के आयोजन प्रमुख और ब्रह्मराष्ट्र एकम से सचिन सनातनी ने बताया कि हम सभी काशीवासियों का ये सौभाग्य वाला दिन होगा जब मोक्षदायिनी नगरी काशी में इस बार गंगा महाउत्सव को मेले का रूप भी दिया जाएगा । सचिन जी ने ये भी बताया कि माँ गंगा सदियों से हमारी संस्कृति और सभ्यता को विकसित करती आ रही है और पापनाशिनी गंगा के इस विराट प्राकट्य उत्सव को धूमधाम से मनाया जाएगा। आयोजन समिति से शामिल हुए शशिप्रकाश, डॉ सुधीर मिश्र, विपिन सेठ, अमित सिंह, धीरेंद्र पांडेय, प्रिया मिश्रा, भावना विश्वास, जतिन, पवन, कुशल, सुजीत, संतोष, रजनी, गोलू आदि लोग उपस्थित रहे। उपरोक्त प्रेस न्यूज को अपने चर्चित समाचार पत्रिका में प्रमुखता से खबर लगाने की महती कृपा करें जिससे ये सूचना जनमानस तक आपके पत्रिका के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित हो सके । हम आपके हृदय से आभारी रहेंगे।

आनलाइन कम्पनी के नाम पर लाखों रुपया का चुना लगाकर फरार पीड़ित लगा रहे न्याय की गुहार

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। अमरपुर बटलोहिया म0न0 A40/57 K12 थाना जैतपुरा निवासी जैनुलआबदीन उर्फ बड़क, ज्याउद्दीन उर्फ मुन्नक, अजहरुद्दीन उर्फ छोटक पुत्रगण सलीम उर्फ बड्डे एवं सलीम उर्फ बड्डे का नाती दिलशाद उर्फ सोनू सहित इन लीगों ने मिलकर एक फर्जी ऑनलाइन कंपनी खोलकर मॉर्केट वैल्यू से आधे दाम पर सामान देने का वादा करके सैकड़ों लोगो से लाखो रुपया लेकर ये लोग घर में ताला लगा कर फरार हो गए है इन लोगो ने जो फर्जी ऑनलाइन कंपनी खोली थी उसका नाम दिलसागा टेक्नोलॉजी (OPC) प्राइवेट लिमिटेड नाम से ऑनलाइन कंपनी दिखा कर ये लोग बोल रहे थे की कंपनी का ऑफर है जिसमे सभी

सामान चाहे मोबाइल हो या घरेलु जीवन में इस्तेमाल होने वाले सामान फ्रीज , टीवी , अलमारी , बेड एवं सभी तरह के इलेक्ट्रॉनिक सामान मॉर्केट प्राइस से आधे दाम में देने का वादा करते थे जिसमे कुछ लोगो को सामान आधा पैसा ले कर दिया ताकि लोगो में विस्वास बना सके और जैसे जैसे लोगो के अंदर विश्वास बना लिए और इन लोगो ने सभी से पैसा लिया किसी से आठ हजार किसी से पंद्रह हजार किसी तीस हजार इस तरह मिला कर इन लोगो ने पुरे मोहल्ले की तमाम जनता से लगभग पचीस से तीस लाख रुपया ले कर फरार हो गए 10 अप्रैल 2022 को इन लोगो ने सभी लोगो को सामान या तो पैसा देने का वादा किया था जब सब पीड़ित लोग इनके घर वादे के अनुसार गए तो ये लोग घर में ताला बन्द कर फरार हो गए । जनता से उक्त लोगो ने सामान देने के नाम पर फर्जी ऑनलाइन कंपनी को दिखा कर लाखो रुपया लिया और सामान भी नहीं दिया जिसके कारन पीड़ित जानता और उनके परिजन बहुत परेसान है पीडितो में मो0 अशरफ , राईस अहमद ,साजिद इकबाल, सफीउर्रहमान खुर्शीद , इरफान ,मो0 सकलैन ,रशीद ,मुस्ताक सहित तमाम पीड़ित मौजूद थे ।

डिप्रेशन भी दांतों पर डालता है गहरा असर : डॉ. जैद

प्रखर खेतासराय (जौनपुर)। तनाव आजकल की भागदौड़ की जीवनशैली में एक आम समस्या की तरह है, इसके दुस्प्रभाव से दिमाग सम्बन्धी बीमारी,नींद न आना,बालों का झड़ना बीमारियों का खतरा बना रहता है वही तनाव की वजह से आपके दांतों पर गहरा असर डालता है। दांत को किटकिटाना, या चबाने जैसी हरकतें करना एक गम्भीर बीमारी ब्रूक्सिस्म के लक्षण हैं। खास बात यह है कि मरीजों को पता भी नही चलता, इस का कारण है नींद में दांत किटकिटाने की वजह से रोगी को इस बात की जानकारी नही हो पाती और एक दिन जब दांत टूटना शुरू होजाते है या चेहरे पर सूजन आ जाता है तब तक ब्रूक्सिस्म बीमारी से चपेट में आ चुके होते है। उक्त विचार है हबीब हॉस्पिटल के मुख एवं दन्त रोग विशेषज्ञ डॉ जैद खान के, वे शनिवार को अपने चेम्बर में पत्रकारों से खुलकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि

इस बीमारी को नाइट गार्ड आक्लूमजल स्प्लिंट के प्रयोग से रात में दांतो का किटकिटाना बंद किया जा सकता है। बार बार मुंह के छाले के बाबत डॉ खान ने कहा कि इसे नजरअंदाज कतई न करें, चिकित्सा से जरूर परामर्श लें। मुंह के छाले लगातार हो रहे हों, इनमें दर्द या गांठ हो, दाँत कमजोर हो रहे हो यह मुंह का कैंसर भी हो सकता है। उन्होंने कहा कि मसूड़ो से खून बहना हार्मोन्स के असन्तुलित हो जाने का संकेत है। ब्रश करते समय मसूड़ों से खून आना, सूजन होना इसका मतलब है आपके हार्मोन्स संतुलित नही है। बढ़ते उम्र के साथ साथ प्रेगनेंसी, मेनोपॉज महिलाओं में देखने को मिलती है। एक प्रश्न के उत्तर में डॉ जैद ने कहा कि दांतो की जड़ो से शुरू होता है संक्रमण, दांत की जड़ों के ऊपरी भाग में होने वाले संक्रमण से दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है. यह इफेक्शन बहुत ही सामान्य और लक्षणरहित होता है।

संसाधनों से लैस होंगे शाहगंज के सभी सरकारी अस्पताल

डिप्टी सीएम बृजेश पाठक से मुलाकात कर क्षेत्रीय विधायक रमेश सिंह ने सौंपा मांग पत्र

प्रखर जौनपुर। शाहगंज के विधायक रमेश सिंह शुक्रवार को उप मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बृजेश पाठक से लखनऊ में मिलकर विधानसभा शाहगंज की प्रमुख समस्याओं पर चर्चा की। इस दौरान डिप्टी सीएम ने भरोसा दिया कि शाहगंज विधानसभा के सभी सामुदायिक, प्राथमिक और अतिरिक्त स्वास्थ्य केंद्र और राजकीय अस्पताल को पूरी तरह से सभी संसाधनों से लैस कर हाईटेक किया जाएगा । गंभीर मरीजों को किसी भी विशेष परिस्थिति में यहां से रेफर न करना पड़े, और उनकी जान बचाई जा सके। विधायक ने चिकित्सकों की कमी, विशेषज्ञ डॉक्टरों का अभाव, पैरामेडिकल स्टाफ की कमी के संबंध में मांग पत्र भी सौंपा। रमेश सिंह ने यह भी बताया कि शाहगंज विधानसभा क्षेत्र चार जनपद क्रमशः अयोध्या,

अयोध्या, सुल्तानपुर, आजमगढ़ और अंबेडकर नगर के जिले से आते हैं शाहगंज में मरीज

आजमगढ़, सुल्तानपुर और अंबेडकर नगर की सीमा से सटा है। यहां ऊक्त जिलों से मरीज और उनके तीमारदारों का आना जाना लगा रहता है। ऐसे में यहां के अस्पताल को सभी संसाधन से लैस करना बेहद जरूरी है। इसके बाद विधायक शाहगंज रमेश सिंह ने प्रदेश के कैबिनेट मंत्री जीतिन प्रसाद से मिल कर क्षेत्र के जर्जर सडकों के बारे मे मिलकर समस्याओ को अवगत कराते हुये बताया कि शाहगंज पिछले दो दशक से उपेक्षा का शिकार रही है। क्षेत्र मे एक भी विकास का कार्य सपा के पूर्व विधायक द्वारा नही किया गया। उन्होने कहा कि जिस तरह से क्षेत्र के जनता मेरे ऊपर विश्वास जता कर चुनाव जिताई है, उस विश्वास को टूटने नही दूंगा। उन्होने कहा कि क्षेत्र की जर्जर सडके और नई सडके बनाने के लिए लोक निर्माण मंत्री से मिलकर कई बड़े प्रस्ताव दे दिया हूं। मंत्री ने जल्द आश्वासन दिया है कि जल्द सडकों का निर्माण शुरू हो जाऐगा।

बाबा साहेब के सपने को पूरा करने के लिए हर बच्चे को शिक्षित करना होगा- शिव बचन यादव

प्रखर केराकत जौनपुर। केराकत विकासखण्ड क्षेत्र के ग्राम पंचायत बेलहरी में गुरुवार को भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जयंती

बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर बतौर अतिथि के रुप में बोलते हुए प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष शिव बचन यादव ने कहा कि बाबा साहेब के सपने को पूरा करने के लिए हमें हर बच्चे को शिक्षित करना होगा यह कार्य आप सब के सहयोग से ही पूरा होगा गांव के सरकारी विद्यालय में बच्चों का दाखिला कराना होगा। इस कार्यक्रम में ग्राम प्रधान प्रवेश कुमार सिंह प्राथमिक विद्यालय बेलहरी के प्रधानाध्यापक सूरज कुमार प्राथमिक शिक्षक संघ के मंत्री धर्मेंद्र कुमार के साथ साथ गांव के तमाम प्रबुद्ध नागरिक व समस्त ग्रामवासी उपस्थित रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता रमेश चंद गौतम व संचालन रविंद्र कुमार ने किया।

दबिश देकर वारंटी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रखर खेतासराय जौनपुर। पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराधियो के खिलाफ धड़ पकड़ अभियान के तहत एक वारंटी को शुक्रवार की सुबह फरीदपुर से दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को सम्बंधित धाराओ में चालान न्यायालय भेज दिया। थानाध्यक्ष श्रीप्रकाश रॉय ने बताया कि शुक्रवार को सुबह आठ बजे मय हमराह पुलिस बल क्षेत्र में पेट्रोलिंग पर थे। मुखबिर की सूचना के आधार पर फरीदपुर गांव निवासी सुभाष पुत्र रामधारी को सम्बंधित मामलों में वारंट जारी होने पर दबिश देकर हिरासत में ले लिया गया। आवश्यक कार्यवाही के पश्चात चालान न्यायालय भेज दिया। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसओ श्रीप्रकाश रॉय के साथ उपनिरीक्षक राकेश कुमार सिंह, कांस्टेबल शिवधर भारती समेत अन्य लोग शामिल रहे।

जयकारों के साथ निकली हनुमानजी की शोभायात्रा

प्रखर पूर्वांचल महराजगंज/बृजमनगंज। स्थानीय नगर पंचायत बृजमनगंज मे शनिवार हनुमान जयंती पर बजरंग दल संगठन के युवा नौजवानों द्वारा ठाकुर द्वारा परिसर से नगर भ्रमण के लिए हनुमानजी की सुंदर झांकी के साथ शोभायात्रा निकाली गई।जिसमें कस्बे के नौजवानों सहित जनप्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।पूरा नगर जयश्रीराम के नारों से गूंज रहा था।हनुमानजी का डोला काली मंदिर चौराहे से कालेज रोड होकर रामलीला पडाव तक वहां से डाकघर रोड होते हुए स्टेशन रोड ठाकुर द्वारा हनुमान मंदिर पर पहुंचा।जहां स्थानीय ब्यापारियों द्वारा भजन कीर्तन कार्यक्रम रखा गया है तथा शाम को प्रसाद वितरण का कार्यक्रम होगा।कस्बे में जगह जगह पर जलपान की ब्यवस्था स्थानीय लोगों ने किया था।उ.प्र.ब्यापार मंडल विधानसभा संगठन ने भी मुख्य चौराहे पर डोले के साथ चल रहे भक्तों को जलपान कराया।डालें मे स्थानीय अंकित जायसवाल, मनोज जायसवाल, अमित जायसवाल, शिवा

जायसवाल,सूरज जायसवाल, रवि वर्मा, अनिल जायसवाल, सुवाष गुप्ता, प्रेम जायसवाल,सन्नी जायसवाल, गणेश जायसवाल जनप्रतिनिधि चेयरमैन प्रत्याशी दिलीप चौधरी,चेयरमैन प्रत्याशी राकेश जायसवाल,चेयरमैन प्रत्याशी विनोद जायसवाल, पू. जिला पंचायत सदस्य योगेंद्र यादव,ब्यापार मंडल विधानसभा अध्यक्ष आशीष जायसवाल, उपाध्यक्ष जगदम्बा जायसवाल, मंत्री गौरव जायसवाल,उपाध्यक्ष गणेश जायसवाल, संगठन मंत्री विवेक कसौधन,श्याम प्रकाश जायसवाल सहित सैकड़ों लोग शामिल रहे।

जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस पर अनुपस्थित अधिकारियों का एक दिन का वेतन रोकने का दिया निर्देश

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जन समस्याओ के त्वरित निस्तारण हेतु सम्पूर्ण समाधान दिवस तहसील सदर में जिलाधिकारी एम.पी. सिंह की अध्यक्षता एवं पुलिस अधीक्षक रामबदन सिंह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जिसमे 21 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए और मौके पर 04 का निस्तारण किया गया। जनसमस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु सातो तहसीलो की सूचना के अनुसार सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 176 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें मौके पर 12 शिकायत/प्रार्थना पत्रो का निस्तारण किया गया। तहसील सैदपुर में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 26 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए, जिसमें 1 का मौके पर निस्तारण किया। तहसील सेवराई में उपजिलाधिकरी अध्यक्षता में 11 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए जिसमें से 1 का मौके पर निस्तारण किया गया। जखानियॉ तहसील में अपर जिलाधिकारी वि.रा. की अध्यक्षता में 42 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए, जिसमें मौके 2 का निस्तारण किया गया। तहसील कासिमाबाद में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 35 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए, जिसमें से 3 का मौके पर निस्तारण किया गया। तहसील जमानियॉ में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 16 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुए, जिसमें से मौके पर 1 का निस्तारण किया गया एवं तहसील मुहम्मदाबाद में उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में 25 शिकायत/प्रार्थना प्राप्त हुआ, जिसमें निस्तारण शून्य रहा। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायत/प्रार्थना पत्रो का सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये कि तत्काल मौके पर जाकर स्थलीय निरीक्षण करते हुए निस्तारण कराये। उन्होने आई जी आर एस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतो को आगामी दो दिवस में शत-प्रतिशत निस्तारण का निर्देश दिया। उन्होने कहा इसकी समीक्षा सीधे शासन स्तर से होती है। इसमे लापरवाही पर सम्बन्धित अधिकारी स्वयं जिम्मेदार होगे। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस पर अनुपस्थित मुख्य चिकित्साधिकारी गाजीपुर, ए.ई आर.ई.डी., अधिशासी अभियन्ता जल निगम (शहरी/ग्रामीण), अधिशासी अभियन्ता नलकूल प्रथम, द्वितीय, अधिशासी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग, सी ओ चकबन्दी सदर, अधिशासी अभियन्ता लघु डाल का एक दिन का वेतन रोकने का निर्देश दिया। आज की इस बैठक में मुख्य विकास अधिकारी श्री प्रकाश गुप्ता, उपजिलाधिकारी सदर, जिला विकास अधिकारी, क्षेत्राधिकारी सदर एवं अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

हेयर स्टाइलिस्ट के खिलाफ जारी हुआ सम्मन

प्रखर रामनगर/वाराणसी। धार्मिक उन्माद फैलाने के एक मामले में आरोपित जावेद हवीब की मुश्किलें अब बढ़ सकती है। क्योंकि वाराणसी के एसीजेएम अदालत ने जावेद हवीब के खिलाफ सम्मन जारी कर आगामी सात मई तक हाजिर होने का फरमान जारी किया है। मुकदमे को देख रहे एडवोकेट अरुण जयसवाल ने कहा कि माननीय न्यायालय द्वारा जारी सम्मन न्याय प्राप्ति के क्रम में मील का पत्थर साबित होगा। वहीं मुकदमे के वादी प्रमुख समाजसेवी कृपा शंकर यादव ने भी जिला न्यायालय के कदम पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ की एकता और अखण्डता को खण्डित करने की परम्पराओ को बढ़ावा देने वाली शक्तियों का समूल विनाश करने के क्रम में जारी सम्मन एक बेहतर कदम है। बताते चलें कि जावेद हवीब द्वारा दो सितम्बर वर्ष 2017 में अंग्रेजी अखबार द टेलीग्राम में हिन्दू देवी-देवताओं के खिलाफ विज्ञापन छपवाया गया था।

नव भारत निर्माण समिति की ओर से गोमती देवी उत्कृष्टता पुरस्कार 2022 का आयोजन रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर में 23 अप्रैल को

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। आगामी 23 अप्रैल को वाराणसी के रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर में नव भारत निर्माण समिति की ओर से पहली बार गोमती देवी उत्कृष्टता पुरस्कार 2022 प्रदान करने के लिए कई विभूषित का चयन किया है। यह पुरस्कार शिक्षा,साहित्य, कला एवं संस्कृति, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग एन्ड मेडिसिन, बिजनेस एवं उद्यमिता, जनसेवा और समाज सेवा, स्पोर्ट्स,योग, वैलनेस, महिला सशक्तिकरण के लिए दिया जाएगा। इसके साथ ही लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सुशोभित किया जाएगा 11 काशी की वो हस्तियां है जिन्हें काशी रत्न अलंकरण से सम्मानित किया जाएगा। 6 सदस्यों की जूरी कमेटी ने इन सभी हस्तियों के चयन किया है। गोमती देवी उत्कृष्टता पुरस्कार से जिन्हें सम्मान किया जाएगा ऐसे 7 शख्स है जिनके नाम है प्रोफेसर सीमा सिंह, कृषि क्षेत्र के लिए पद्मश्री चंद्रशेखर सिंह, डॉक्टर ए के अग्रवाल,बिहार के आईपीएस विकास वैभव,विशेष भृगवंशी कप्तान भारतीय बास्केटबॉल टीम, पूर्व डीजीपी यूपी सुश्री सुतापा सान्याल, कृषि वैज्ञानिक कीर्ति सिंह का नाम शामिल है। वही काशी रत्न अलंकृत से सम्मानित होने वालों में पद्मश्री प्रोफेसर राजेश्वर आचार्य (अध्यक्ष - यूपी संगीत नाट्य अकादमी), प्रोफेसर डॉक्टर विधि नागर बी यच यू, प्रोफेसर एन के दुबे बी यच यू, डॉक्टर नन्दिता शास्त्री प्रधानाचार्य पाणिनि कन्या महाविद्यालय, डॉक्टर के वी पी सिंह पूर्व अध्यक्ष इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, अशोक गुप्ता (बनारस बिड्स), गौरी शंकर सिंह इंटरनेशनल हॉकी कोच, प्रोफेसर उपेंद्र नाथ पांडेय (बी यच यू), प्रदीप श्रीवास्तव पत्रकार, श्री सनातनी रामानंद डॉक्टर दीप्ति सिंह गृहस्थ भारत का नाम शामिल है।

संक्षिप्त खबरें

सकलडीहा कोतवाली ने पकड़ी देशी शराब, 15 हजार का इनामी शराब तस्कर भी गिरफ्तार

प्रखर चंदौली। जिले से सकलडीहा कोतवाली पुलिस ने 15000 के इनामी शराब तस्कर डब्लू चौहान और सुरेश को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। यह शराब तस्कर बिहार के लिए शराब तस्करी करने का काम करता है।आपको बता दें कि मुखबिर की सूचना पर सकलडीहा कोतवाली पुलिस के कोतवाल विनोद कुमार मिश्रा ने अपने सहयोगियों के साथ सघन चेकिंग के दौरान इटावा चौराहे के पास से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया और उसके पास मौजूद बोरे में से 82 सीसी ब्लू लाइम अवैध देसी शराब बरामद की।गिरफ्तार किए गए व्यक्ति से पूछताछ के दौरान पता चला कि वह शातिर शराब तस्कर डब्लू उर्फ सुरेश चौहान है, जो दिनदासपुर गांव का रहने वाला है। पकड़े गए अपराधी ने बताया कि उसके ऊपर इसके पहले भी सकलडीहा और धानापुर थाने में कई मामले दर्ज हैं।शराब तस्कर ने स्वीकार किया कि वह बिहार राज्य में शराब की तस्करी करता है और उसके यही आजीविका का मुख्य साधन है। बताया जा रहा है कि उसके ऊपर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज करके जेल भेज दिया है। इसको गिरफ्तार करने वाली टीम में इंस्पेक्टर विनोद कुमार मिश्रा, उपनिरीक्षक भैरव नाथ, हेड कांस्टेबल संजीव कुमार सिंह और कांस्टेबल राम निहाल शामिल हैं।

सफाई कर्मियों व जिम्मेदार लोगों की घोर लापरवाही के चलते सीवर के पानी में चलने को मजबूर ग्रामवासी

प्रखर वाराणसी। कागजों पर भले ही सभी ग्राम सभाओं को चुस्त-दुरुस्त दिखाया जा रहा हो मगर इसका धरातलीय निरीक्षण किया जाए तो हालात स्वतः सामने आ जाएंगे कुछ ऐसा ही परिदृश्य आपको चोलापुर विकासखंड के अंतर्गत आने वाले जरियारी ग्राम सभा में देखने को मिल जाएगा ग्राम सभा के लिंक मार्गो की स्थिति बहुत ही दयनीय है वर्षों से सड़कों पर जमे हुए सीवर के पानी में ग्रामीण चलने को मजबूर है ग्राम सभा के जिम्मेदार मुलाजिमों का ध्यानकभी भी इस तरफ नहीं गया सफाई कर्मियों ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत अध्यक्ष ने भी जमे हुए सीवर के पानी का कभी कोई सुचारू निदान करना चाहा भले ही उनके द्वारा कागजों पर इसकी साफ-सफाई कई बार करवा दी गई हो सड़क पर जमा सीवर के पानी के चलते बढ़ते संक्रमण के चलते ग्राम वासियों को बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है कहीं ऐसा ना हो कि ग्रीष्म काल में स्थिति और भी भयावह हो जाए।

आदर्श गांव नागेपुर में हिंदू महासभा ने मनाया अंबेडकर जयंती

प्रखर मिजार्मुराद वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर गोद लिए गए गांव नागेपुर में गुरुवार की शाम संविधान के रचनाकार बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जी स्थापित प्रतिमा पर राष्ट्रवादी हिंदू महासभा वाराणसी के जिलाध्यक्ष अवनीश मिश्र ने स्थानीय लोगो के साथ मिलकर माल्यार्पण किया व जिलाध्यक्ष ने कहा कि डॉ भीमराव अंबेडकर जिन गरीबों, मजदूरों व वंचित लोगों के लिए हमेशा संघर्ष किया।आज उनके सपनों को साकार करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एकमात्र नेता है।इस दौरान राष्ट्रवाद हिंदू महासभा महामंत्री गौरव पाठक, उपाध्यक्ष अतुल उपाध्याय, जिला मीडिया प्रभारी अभिषेक त्रिपाठी, जिला मंत्री अरविंद सिंह सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

छुट्टा/निराश्रित गोवंश दिखाई दे तो करें सूचित

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी ने जनपदवासियो को सूचित किया है कि जनपद में यदि कही छुट्टा/निराश्रित गोवंश दिखाई दे रहे है तो उसकी सूचना कन्ट्रोल रूम के दूरभाष संख्या- 0548-2226101 अथवा 7007279577 पर प्रातः 10 बजे से सायं 05 बजे तक दे सकते है, ताकि उनको गो-आश्रय स्थलो में संरक्षित कराया जा सके।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं